TEACHERS OF BIHAR

The Change Makers

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

मई 2025

अंक 9

मासिक कविता संग्रह

ई-पत्रिका तक पहुँचने के लिए क्यू आर कोड को स्कैन करें

teachersofbihar.padyapankaj.org

पद्यपंकज काव्य संग्रह

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

पद्यपंकज काव्य संग्रह

प्रकाशन सहयोग

प्रधान संपादक

देव कांत मिश्रा
मध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज, भागलपुर

सम्पादक

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

पाठ शोधक

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज, पटना

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

नेतृत्वकर्ता

शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय नारायणपुर, बिक्रम, पटना

प्रिय साथियों,

आज हम एक विशेष अवसर का स्वागत करने के लिए एकत्रित हुए हैं, जब हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं। यह संग्रह न केवल एक पुस्तक है, बल्कि यह बिहार के शिक्षकों की भावनाओं, विचारों और रचनात्मकता का प्रतीक भी है। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर, हम सभी मिलकर अपने भाषा और साहित्य की समृद्धि को मान्यता देते हैं और इस काव्य संग्रह के माध्यम से अपने विचारों को साझा करते हैं।

बिहार, जो हमेशा से शिक्षा और संस्कृति का गढ़ रहा है, यहाँ के शिक्षकों ने इस संग्रह के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया है। यह कविताएँ न केवल शिक्षकों के व्यक्तिगत अनुभवों का दर्पण हैं, बल्कि समाज में उनके योगदान और संघर्षों की कहानी भी कहती हैं। प्रत्येक कविता एक अनूठा दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को छुआ गया है—प्रेम, संघर्ष, समाज, और प्रकृति।
हम हिंदी दिवस के अवसर पर इस काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं, जो हमारी मातृभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हिंदी, जो हमारी संस्कृति, परंपरा और पहचान का एक अभिन्न हिस्सा है, इसे संजीवनी प्रदान करना हमारे सभी का कर्तव्य है। इस संग्रह के माध्यम से हम हिंदी भाषा को समृद्ध करने के लिए एक कदम आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमें अपने विचारों को अभिव्यक्त करने और समाज में अपनी आवाज उठाने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करता है।
इस काव्य संग्रह के माध्यम से हम समाज में सकारात्मक परिवर्तन की ओर एक कदम बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि साहित्य समाज का आईना होता है। इस संग्रह में कवियों ने समाज की विडंबनाओं, संघर्षों और उम्मीदों को चित्रित किया है। ये कविताएँ न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि ये सोचने और विचार करने के लिए भी प्रेरित करती हैं। हम आशा करते हैं कि यह काव्य संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए, बल्कि सभी पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

हमारा यह प्रयास तब सफल होगा जब आप सभी का सहयोग और समर्थन हमें प्राप्त होगा। इस संग्रह को पढ़ें, विचार करें और अपने अनुभव साझा करें। हमें आपकी प्रतिक्रिया की आवश्यकता है ताकि हम आगे भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन कर सकें।

आखिर में, हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह के सभी लेखकों को बधाई देता हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त किया। हम आशा करते हैं कि यह संग्रह सभी को प्रेरित करेगा और हमारी संस्कृति को समृद्ध करेगा।

धन्यवाद!
—टीचर्स ऑफ बिहार

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है— जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ रश्मि प्रभा

संयुक्त निदेशक

SCERT, PATNA

प्रधान सम्पादक की कलम से....

आएँ! नई कविता रचाएँ।
औरों का नित ज्ञान बढ़ाएँ।।
'पद्यपंकज' उत्पल खिलाएँ।
टीओबी बगिया महकाएँ।।

प्यारे साथियों,
'पद्यपंकज' रचनाकारों हेतु टीचर्स आफ बिहार का एक सुंदर बाग है जिसमें भाँति- भाँति कविता रूपी प्रसून समयानुसार खिलते हैं और विचारों की पवित्र धाराओं और विभिन्न तरह की प्रेरणास्पद रचनाओं से सराबोर कर इसके बाग को सुरभित करते रहते हैं। इसी क्रम में एक पावन विचार मन में आया कि क्यों न एक 'मासिक कविता संग्रह' का बाग लगाया जाए तथा समग्र प्रयास से इसे पुष्पित और पल्लवित किया जाए? ऐसा विचार पाकर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

गाँधी जयन्ती के शुभ अवसर पर सत्य, लगन, निष्ठा, परस्पर सद्भाव व सहयोग की राह को अपनाते एवं यथार्थ के धरातल पर अपने विचारों को तर्क की कसौटी पर कसते तथा मद्देनजर रखते हुए सहर्ष कह रहा हूँ कि यह मासिक कविता संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए अपितु सभी पाठकों के लिए उपयुक्त व प्रेरणा का स्रोत बनेगा। हमारा प्रयास तभी सार्थक होगा जब आपका समुचित सहयोग व समर्थन अंतर्मन से होगा। बगैर आपके टीओबी की बगिया कैसे महकेगी? इसके लिए आपका सद्विचार, चिंतन व सहयोग ही हमें कामयाबी दिलाएगी।
अंत में, पद्यपंकज 'मासिक कविता संग्रह' के सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं जो समय-समय पर अपनी रचना से समूह तथा अपनी लेखनी को सुशोभित करते हैं तथा अपना अभिमत देते हैं।हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि यह मासिक कविता संग्रह आपको नई दिशा व प्रेरणा प्रदान करेगी। आप अपनी प्रतिक्रिया व अनुभव को सतत् साझा करते रहें।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
संपादक

अनुक्रमणिका

शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1. सुनो सुनो मज़दूर हूँ मैं	मनु कुमारी	9
2. सनातन धर्म	गिरिन्द्र मोहन झा	10
3. छंद चौपई	देवकांत मिश्र	11
4. सबको गले लगाये हम	राम किशोर पाठक	12
5. दुश्मन की गद्दारी	रत्नप्रिया	13
6. अग्निशमन	मनु कुमारी	14
7. धरती का मान बढ़ाएंगे	देवकांत मिश्र	15
8. श्रमोत्सव	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी आर्या	16
9. विश्व श्रमिक दिवस	राम किशोर पाठक	17
10. वीरों की भूमि	नीतेश आनंद	18
11. मित्रवत व्यवहार	जैनेन्द्र प्रसाद रवि	19
12. संधि विचार	राम किशोर पाठक	20
13. मा सम्पूर्ण ब्रह्म	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी आर्या	21
14. शिक्षक ज्ञान के दीपक	अमरनाथ त्रिवेदी	22
15. हस्त प्रक्षालनम	राम किशोर पाठक	23
16. टीचर्स ऑफ बिहार	नूतन कुमारी	24
17. आदमी और जंगल	संजय कुमार	25
18. आलोचना एवं समालोचना	सुरेश कुमार गौरव	26
19. अलख जगाना है	मृत्युंजय कुमार	27
20. जानकी नवमी	राम किशोर पाठक	28
21. मानवता का हित करें	मनु कुमारी	29
22. दहेज	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी आर्या	30
23. सर्वजन हिताय...	नूतन कुमारी	31
24. माँ	रुचिका	32
25. सीता सोहर	मनु कुमारी	33
26. ऑपरेशन सिंदूर	मनु कुमारी	34
27. प्रकृति का संदेश	सुरेश कुमार गौरव	35
28. उठा वीणा बजा डालो	अमरनाथ त्रिवेदी	36
29. कौन रुका है	गिरिन्द्र मोहन झा	37
30. फल फूल सब्जी	नीतू रानी निवेदिता	38
31. शिक्षा का महत्व	मृत्युंजय कुमार	39
32. सिंदूर की चिंगारी	अर्जुन केसरी	40
33. स्याही अनुभव की	अवनीश कुमार	41
34. आओ अभिनंदन करें	मनु कुमारी	42
35. माँ की बात	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी आर्या	43
36. सुखी कौन	गिरिन्द्र मोहन झा	44
37. सिया के राम आए	अमरनाथ त्रिवेदी	45
38. नापाक इरादे	मनु कुमारी	46
39. ममता मूरत	सुरेश कुमार गौरव	47
40. घनाक्षरी विधान	राम किशोर पाठक	48
41. मेरी मुन्नी	राम किशोर पाठक	49
42. माता का सम्मान	अमरनाथ त्रिवेदी	50
43. महाराणा प्रताप	राम किशोर पाठक	51
44. मां	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी आर्या	52
45. माँ का प्यार	राम किशोर पाठक	53
46. टेडी बियर	अवनीश कुमार	54
47. सत्य अहिंसा का राही	रत्ना प्रिया	55
48. कर्म	नूतन कुमारी	56
49. बुद्धत्व की प्राप्ति	अमरनाथ त्रिवेदी	57

शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
50. धर्म चक्र प्रवर्तन सिखलाएँ	सुरेश कुमार गौरव	58
51. बुद्धं शरणं गच्छामा	राम किशोर पाठक	59
52. जंग अभी बाक़ी है	नीतू रानी निवेदिता	60
53. Appreciating rhymes	राम किशोर पाठक	61
54. खोज अभियान में	एस के पूनम	62
55. मातृ दिवस	गिरिन्द्र मोहन झा	63
56. मोहिनी माया	राम किशोर पाठक	64
57. अच्छा मौका खो दिया	राम किशोर पाठक	65
58. पर्यावरण संरक्षण	मनु कुमारी	66
59. कर्त्तव्य बिना अधिकार नहीं	अमरनाथ त्रिवेदी	67
60. सफल बनो	राम किशोर पाठक	68
61. कर ले तू उपकार बन्दे	मनु कुमारी	69
62. मंजिल ही एक ठिकाना है	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी आर्या	70
63. चंदा मामा और तितली रानी	सुरेश कुमार गौरव	71
64. भारत के वीर सपूत	अमरनाथ त्रिवेदी	72
65. दसों दिशाएँ	राम किशोर पाठक	73
66. दिशा धुन	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी आर्या	74
67. स्व कर्तव्य के दीवाने	अमरनाथ त्रिवेदी	75
68. फलों का राजा आम	राम किशोर पाठक	76
69. भारत माता का मैं लाल	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी आर्या	77
70. बच्चों को सीख	रुचिका	78
71. गरमी की रात	आशीष अम्बर	79
72. लोरी ममता की मीठी छाया	सुरेश कुमार गौरव	80
73. क्रिकेट में वह छाया सोना	रामपाल प्रसाद सिंह	81
74. मातृभाषा का शैक्षणिक उपयोग	राम किशोर पाठक	82
75. राष्ट्रीय आतंक विरोधी दिवस	राम किशोर पाठक	83
76. शौर्य की शपथ	सुरेश कुमार गौरव	84
77. शिक्षा में मातृभाषा की उपयोगिता	अमरनाथ त्रिवेदी	85
78. विश्व कछुआ दिवस	राम किशोर पाठक	86
79. कछुए की चाल	सुरेश कुमार गौरव	87
80. जहाँ चाह वहाँ राह हमारी	अमरनाथ त्रिवेदी	88
81. सुनो बेटियों	राम किशोर पाठक	89
82. लक्ष्य की प्राप्ति	अमरनाथ त्रिवेदी	90
83. ज्ञान दीप जलता जहाँ	देवकांत मिश्र दिव्य	91
84. हम नन्हें मुन्ने बालक हैं	अमरनाथ त्रिवेदी	92
85. वट सावित्री	राम किशोर पाठक	93
86. आँचल में भर लूँ	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी आर्या	94
87. संस्कारों का संगम	सुरेश कुमार गौरव	95
88. माँ के सीख	राम किशोर पाठक	96
89. हे कौवे	स्नेहलता द्विवेदी आर्या	97
90. बचपन में जो नहीं पिटाया	रामपाल प्रसाद सिंह	98
91. संख्या का ज्ञान करें प्रदान	राम किशोर पाठक	99
92. बच्चों से संख्या ज्ञान	रामपाल प्रसाद सिंह	100
93. गिनती	डॉ. स्नेहलता द्विवेदी आर्या	101
94. बच्चों में संख्या ज्ञान कराएं	अमरनाथ त्रिवेदी	102
95. लगन सदा मन राम लगाओ	देवकांत मिश्र दिव्य	103
96. पिता	अवनीश कुमार	104
97. हिन्दी की पत्रकारिता	सुरेश कुमार गौरव	105
98. मैं पत्रकार हूँ	मनु कुमारी	106
		107
		108
		109
		110

सुनो-सुनो मजदूर हूँ मैं

सिर पर भारी बोझ उठाएँ।
दर्द सहें पर न घबराएँ।
दो जून की रोटी पर हीं ,
मन में रखता सबूर हूँ मैं।
सुनो-सुनो मजदूर हूँ मैं।।
संघर्ष की आग में खुद को जलाता,
वक्त की मार से मारा जाता ।
मेहनत कर बन कनक रूप ,
बन जाता मशहूर हूँ मैं।
सुनो- सुनो मजदूर हूँ मैं।
कभी खेती के काम मैं आता।
तन ढँकने को वस्त्र बनाता।
कुली रूप में स्टेशन पर ,
दिन रात दिखता जरूर हूँ मैं।
सुनो – सुनो मजदूर हूँ मैं।।
कचड़े का मैं ढेर उठाता।
सारे गंध मैं दूर भगाता।
स्वयं कष्ट सहकर इस जग को,
सुख देता भरपूर हूँ मैं।
सुनो- सुनो मजदूर हूँ मैं।।
फुटपाथ पर मैं हूँ सोता।
कभी हँसता कभी छुप-छुप रोता।
परिवार – बच्चों से वर्षों दूर,
रहने को मजबूर हूँ मैं।
सुनो-सुनो मजदूर हूँ मैं।।
मुझे नहीं अति धन की लालच।
ईमानदारी का बस रहे कवच।
संतोष, धैर्य के रूप में हर घर,
बन जाता कोहिनूर हूँ मैं।
सुनो-सुनो मजदूर हूँ मैं।।

मनु कुमारी
विशिष्ट शिक्षिका, मध्य विद्यालय सुरीगाँव, बायसी
पूर्णियाँ , बिहार

सनातन धर्म

धर्म जिसे कहते हैं।
वह सनातन, शाश्वत, परित: है।
धर्म वह है, जिससे हो,
सबका सर्वांगीण विकास।
सद्गुणों को धारण करे,
फैले उच्च आदर्श का उजास।
सनातन धर्म सहिष्णुता, प्रेम, सेवा, त्याग का पाठ पढ़ाता है।
कर्त्तव्यपरायणता, मर्यादा, सत्यनिष्ठा, कल्याण की बात बताता है।
सनातन धर्म प्रभु-भक्ति, ज्ञान, कर्म और योग की बात सिखाता है,
इसमें सबके लिए जगह, सबके लिए मार्ग, यह उदारता दिखाता है।
नैतिकता की बात भरी है, दर्शन, अध्यात्म का है स्थान।
साहित्य, आख्यान के साथ-साथ इसमें छिपा महान विज्ञान।
सत्यं, शिवं, सुन्दरम् इसका महान आदर्श, ईश्वर में आस्था है शिक्षा।
धैर्य, धर्म, साहस कभी न हारना, कितनी भी कठिन आये परीक्षा।
इस धर्म पर जब-जब संकट गहराता है, प्रभु भी लेते हैं अवतार।
सज्जनों की रक्षा करते हैं वे आकर, दुर्जनों का कर देते संहार।
धर्म और मानवता की स्थापना करते, भक्तों का करते उद्धार।
यह दिखला देते हैं कि जीवन को किस तरह दें आकार।
सनातन धर्म में प्रकृति के सभी घटक हैं देव समान।
पूजन-अर्चन करके तुम पा जाओ मनचाहा वरदान।
सनातन धर्म में सदाचार, कुलाचार को महान स्थान।
इसमें छिपे हैं कई रहस्य,
वेद, उपनिषद, सद्ग्रंथ, पुराण, कई शिक्षा और विज्ञान।
रामायण, महाभारत, गीता का ज्ञान।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति इसके वचन,
हैं अति महान।
भारत का यह धर्म सनातन।

गिरीन्द्र मोहन झा
'शिक्षक'

छंद चौपई

रीढ़ देश की हैं मजदूर।
नेह सुधा सुख दें भरपूर।।
नित्य बहाते श्रम का स्वेद।
मन में कभी न रखते भेद।।
चाहे पथ हो या खलिहान।
रखते हैं वे श्रम का ध्यान।।
मिले इन्हें जब शुभ परिवेश।
करे प्रगति तब कोई देश।।
मिले पूर्ण इनको अधिकार।
सही नींव करते तैयार।।
मिलते जब इनको सम्मान।
खिलती अधरों पर मुस्कान।।
कार्य सदा देता सम्मान।
ललक कराती है पहचान।।
पाते उचित न श्रम का दाम।
करिए मन इनका अभिराम।।
वंदनीय हैं ये मजदूर।
करें नहीं इनको मजबूर।।
चलते हैं जो नंगे पाँव।
मिले उन्हें भी शीतल छाँव।।

देवकांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज, भागलपुर, बिहार

सबको गले लगाएँ हम

भटके को राह दिखाएँ हम,
सबको गले लगाएँ हम।
कलुष भाव के घोर तिमिर में,
प्रेम-पुंज फैलाएँ हम।।
दुष्कर्मों का गंध भरा है,
कर्म-पुष्प विकसाएँ हम।
जो मानवता भूल रहे हैं,
उनको पाठ पढ़ाएँ हम।।
धरती को भी होती पीड़ा,
इसका बोध कराएँ हम।
भटके को राह दिखाएँ हम,
सबको गले लगाएँ हम।।
नन्हें परिंदें कोमल प्यारे,
उनको बाज बनाएँ हम।
दूर क्षितिज में खुशबू फैले,
खुद उपवन बन जाएँ हम।।
श्रेष्ठ जनों को आदर देकर,
अपना मान बढ़ाएँ हम।
आपस में हम हाथ मिलाकर,
मुश्किल से लड़ जाएँ हम।।
जीवन सबका सुखमय हो तो,
गीत खुशी के गाएँ हम।
भटके को राह दिखाएँ हम,
सबको गले लगाएँ हम।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

दुश्मन की गद्दारी

मुख में राम बगल में छुरी, लानत ऐसी यारी को ।
अब भारतीय नहीं सहेंगे, दुश्मन की गद्दारी को ।।
मानवता से मेल नहीं है, शत्रु के क्रूर विचार में।
निर्दोषों की हत्याएँ करना, नपुंसक व्यवहार में।।
ईंट का उत्तर पत्थर से हम देंगे अत्याचारी को ।
अब भारतीय नहीं सहेंगे, दुश्मन की गद्दारी को ।।
पाक के नापाक इरादे, अब तक सहते आए हैं।
मैत्री का हाथ बढ़ाया, प्रहार हृदय पर खाए हैं।
उसकी भाषा में समझाएँ, सनकी अर्द्धकपारी को।
अब भारतीय नहीं सहेंगे, दुश्मन की गद्दारी को ।।
पहलगाम-पुलवामा जैसे, कुकृत्य हजार किये।
युद्ध में सदा मुँह की खाई, पर पीठ पर वार किये।
अब सेना ही ठीक करेगी, असाध्य बीमारी को ।
अब भारतीय नहीं सहेंगे, दुश्मन की गद्दारी को ।।
कश्मीर पर दावा करते हो, स्वर्ग को नर्क बना डाला।
आतंक ने ही डँसा तुझे, स्वयं दूध पिला पाला,
बिना जल तड़पकर मरने दो, मौत के व्यापारी को ।
अब भारतीय नहीं सहेंगे, दुश्मन की गद्दारी को ।।
थर-थर काँप रहा आतंकी, तेवर देख भारत का।
सेना का अब कौशल देखो, संघर्ष में महारत का।।
अब रोना रोओगे तुम भी, विवश हो लाचारी को ।
अब भारतीय नहीं सहेंगे, दुश्मन की गद्दारी को ।

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी ,नालंदा

अग्निशमन

आओ बच्चों तुम्हें बतायें ,
अग्निशमन क्या होता है ?
अग्नि से बचाव का यह एक ,
उत्तम माध्यम होता है।।
अग्नि दुर्घटना से नुकसान !
अग्नि बचाव का चलाएं अभियान।।
जीवन हम सबकी असली कमाई।
अग्नि से सुरक्षित रहो मेरे भाई ।।
अग्नि के पास जाओगे।
खतरे में पड़ जाओगे ।।
थोड़ी सी लापरवाही, ले लेती हमारी जान।
बम पटाखे आतिशबाजी,
लाता जीवन में नुकसान।।
अग्नि शमन के लिए हमेशा ,
सूझबूझ से काम करो।
पानी,सूती कपड़े,कंबल का,
तत्क्षण तुम प्रयोग करो।।
मिट्टी तेल से लगे आग गर,
मिट्टी, बालू झट रखना।
आग लगे सिलिंडर पर ,
सूती बोरे से ढंक देना।। गैस का रेग्युलेटर हर पल ,
बच्चों मेरे बंद रखना।
सूखे तिनके वाले जगह पर ,
कभी पटाखे न फोड़ना।।
अग्नि से खेलोगे तो तुम तो,
मिट्टी में मिल जाओगे।
इस सुंदर संसार को बोलो,
फिर कैसे लख पाओगे।।
अग्नि सुरक्षा है आसान।,
क्योंकि अग्नि सुरक्षा यंत्र है महान।।
अग्नि सुरक्षा के तरीके अपनाओ।
जीवन को सुखमय बनाओ।।
अग्नि से सुरक्षा, जीवन से सुरक्षा।।

मनु कुमारी
मध्य विद्यालय सुरीगाँव,पूर्णियां, बिहार

धरती का मान बढ़ाएंगे

विधा: गीत(१६-१६)

धरती का मान बढ़ाएंगे –
जन्म लिए हैं दिव्य भूमि पर
धरती का मान बढ़ाएँगे।
रंग-बिरंगे फूल खिलाकर,
बागों को खूब सजाएँगे।।
धरा हमारी मातृ तुल्य हैं,
सच्ची सेवा भाव रखेंगे।
हरे-भरे पेड़ों से प्रतिदिन,
सुंदर मधुरिम सस्य चखेंगे।।
ऊसर भू हरियाली लाकर,
नित नूतन फूल खिलाएँगे।
जन्म लिए हैं ——- बढ़ाएँगें।
नदियों की जलधारा से नित,
आगे ही बढ़ते रहना है।
कभी नहीं तरु को काटेंगे,
यही वचन सबको कहना है।।
तरु को पुत्र तुल्य हम मानें,
यह गुण सबको बतलाएँगे।
जन्म लिए हैं ———बढ़ाएँगे।
मात हमारी पहली गुरु हैं,
चरणों में शीश झुकाना है।
शुभाशीष गुरुवर से पाकर,
मन में विश्वास जगाना है।
पिता बंधु से नेह लगाना,
यह गुण सबको सिखलाएँगे।
जन्म लिए हैं ———बढ़ाएँगे।

देवकांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय सुलतानगंज, भागलपुर, बिहार

श्रमोत्सव

विश्व के धड़कन को तुम भी देख लो,
झाँक कर हृदय पटल में कर नमन,
श्रम की शक्ति को चलो सजदा करो।
पैर में छाले लिये वह हाथ को है खोलता,
तुम चढ़े अट्टालिका पर मौन कुछ न बोलता।
हर सृजन में है पसीना खून उसका जान उसकी,
मुस्कुराना व सहजता है यही पहचान उसकी।
विश्व के श्रम से ही सृजित विश्व का इतिहास यह है,
जल में , थल में और नभ में श्रम का तो साम्राज्य यह है।
है तुम्हें ऐ शत नमन योद्धा कि तुम हो सारथी,
सभ्यता के उन्नयन के सुर समर महारथी।
आज के दिन हम भी कुछ तो फर्ज अपना चल निभायें,
श्रद्धा का इक पुष्प वन्दन हम मिलें उनको बतायें।
आ मिलें हम इस धरा पर अलख श्रम का यूँ जलायें,
प्रात के अरुणिम छटा में आ श्रमोत्सव हम मनायें

डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज कटिहार

विश्व श्रमिक दिवस

मनहरण घनाक्षरी

सूर्य, चंद्र ग्रह सारे,
चलें श्रम के सहारे,
यदि श्रम को बिसारे, कष्ट भरमार है।
सृष्टि का आधार यह,
कर्ता कृत प्यार सह,
श्रमिक सम्मान गह, चलता संसार है।
श्रमिक हित सम्मान,
पारिश्रमिक प्रदान,
सुरक्षा स्वास्थ्य का ध्यान, रखें व्यवहार है।
श्रमिक दिवस कहे,
अमन चैन से रहे,
श्रमिक न कष्ट सहे, राष्ट्र के आधार है।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज पटना।

वीरों की भूमि

संकट के बादल जब छाए,
वीरों ने हुँकार लगाया।
दुश्मन के सीने पर हमने ,
हर बार तिरंगा लहराया।।
याद करो वह सिंहासन,
गोरी को जिस पर थर्राया।
ये उसी वीर की भूमि है,
राणा ने जिससे गुर्राया।।
मत देख मेरे सरहद को तुम,
कारगिल में लोहा मनवाया।
जब बज हीं गई है रणभेरी,
फिर देख तिरंगा लहराया।।
ये अपराध तुम्हारा क्षम्य नहीं,
माँ- बहनों का सिंदूर पोंछ रुलाया है।
होगा अंतिम सबक तुम्हारा,
खुद काल को तुम ने बुलाया है।।

नितेश आनन्द
NPS बढ़ई टोल बहरामपुर,
मंसूरचक, बेगूसराय

मित्रवत व्यवहार

रूप घनाक्षरी छंद

आपसी बढ़ाए प्रीत,
लिखिए नवल गीत,
अपने पराए हेतु,
दिल में भरा हो प्यार।
कोई नहीं बड़ा-छोटा,
नहीं कोई खरा-खोटा,
शत्रुता को भुलाकर,
सबको बनाएँ यार।
छोटों को देकर मान,
रखें सुविधा का ध्यान,
चर व अचर से हो,
मित्रवत व्यवहार।
गम को छुपा के हँसी,
दीजिए असीम खुशी,
हारे को भी डालें बढ़,
गले में फूलों का हार।

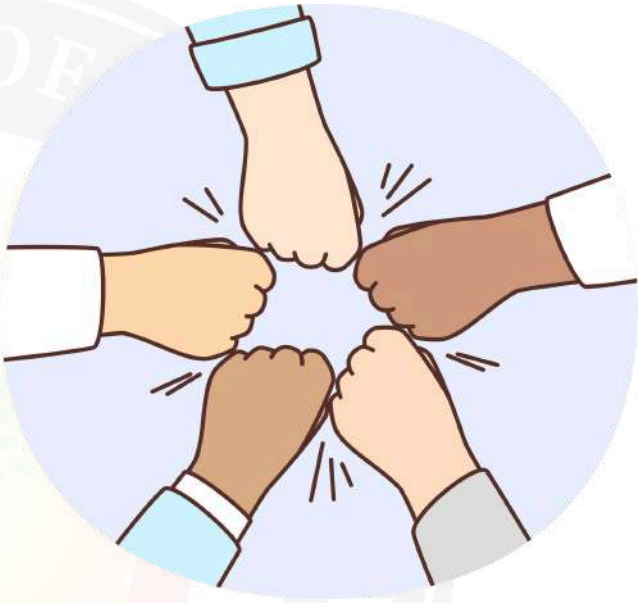

जैनेन्द्र प्रसाद 'रवि'
म. वि. बख्तियारपुर, पटना

संधि विचार

आओ सीखें व्याकरण, सरल ढंग से आज।
दोहा की भाषा यहाँ, सहज करे हर काज।।०१।।

हिंदी भाषा में मिले, चिह्न तिरेपन वर्ण।
वर्णमाला विचार में, छियालीस का पर्ण।।०२।।

ग्यारह स्वर के रूप में, बाकी व्यंजन जान।
स्वर स्वतंत्र उच्चरित है, व्यंजन स्वर आधान।।०३।।

वर्णों के संयोग को, संधि बताते लोग।
नये रूप में शब्द का, करते सभी प्रयोग।।०४।।

मूल रूप से तीन हीं, संधि भेद है जान।
अंतर करना है सरल, सबकी कुछ पहचान।।०५।।

आपस में दो स्वर जुड़े, तभी स्वर-संधि नाम।
लघु पाकर गुण दीर्घ का, करता अद्भुत काम।।०६।।

व्यंजन आपस में जुड़े, या हो स्वर के साथ।
व्यंजन-संधि रूप वही, रखें हृदय धर हाथ।।०७।।

अयोगवाह विसर्ग है, इसका रखिए ध्यान।
वर्णमाला के कुल से, इसको बाहर मान।।०८।।

व्यंजन अथवा स्वर मिले, जब विसर्ग के संग।
संधि सभी विसर्ग कहें, सजे सदा नवरंग।।०९।।

खुद संग संधि सब करें, धरे विविध से रूप।
संधि सभी से जो करे, पाठक वही अनूप।।१०।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज पटना।

माँ सम्पूर्ण ब्रह्म

माँ!
शब्द नही ब्रह्म!
संतति का सर्वस्व!
निर्मल मोहक सौंदर्य!
माँ!
अद्भुत आनंद!
धरा का स्वर्ग।
सृष्टि में अतुल्य!
माँ!
सहती पीड़ा अनंत!
मुस्कराते हुये,
संतति के लिए!
साहस अदम्य!
माँ!
निश्छल, निर्विकार!
नि:स्वार्थ प्रेम!
सर्वथा प्रणम्य!

स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज,
कटिहार

शिक्षक ज्ञान के दीपक

हम शिक्षक ज्ञान के दीपक हैं ,
सदा ज्ञान का प्रकाश फैलाते।
कथनी करनी में भेद नहीं ,
जीवन का यही राग सुनाते।।
बच्चों के सुनहरे सपने को ,
हम अपना सदा बनाते हैं ।
नए- नए कुछ करने को,
नई रीत सदा सिखलाते हैं।।
जीवन के दोराहे पर,
जब बच्चे विचलित होते हैं।
समझाकर ज्ञान की बातों को,
उनको आह्लादित करते हैं।।
हममें न कोई जाति पंथ।
हममें न कोई धर्म ग्रन्थ।।
हम जाते हैं हर गलियों में,
भारत का सौभाग्य बढ़ाते हैं।
प्यारे प्यारे उन बच्चों को,
नित नया ज्ञान सिखाते हैं।।
हम रमते हैं लक्ष्यों में अपने,
साथ लिए जिसको जीते हैं ।
कुछ भी हो जाए इस जग में ,
पर धैर्य न बिल्कुल खोते हैं।।
हम शिक्षक स्नेह के प्याले भी ,
बच्चों को स्नेह के घूँट पिलाते हैं।
वे पहले हमारे दुलारे हैं,
फिर भारत के भाग्य कहलाते हैं।।
उनको गढ़ने में लगता पल-पल मन,
हम युधिष्ठिर, कृष्ण बनाते हैं।
जीवन के अनगिनत राहों में,
उन्हें सच्ची सीख सिखाते हैं।।
जहाँ पीछे सब रह जाते हैं ,
हम आगे की राह बताते हैं ।
पल- पल उन्हें सँवारने में ,
हम कठिन लक्ष्य भी बुनते हैं।
कुछ सहना पड़ता इन राहों में ,
हँस- हँसकर भी इसे चुनते हैं।।
जब विपदा आती हम सब पर ,
कभी शोर नहीं मचाते हैं।
अपने कर्त्तव्यों को सदा आगे रख ,
भारत की तस्वीर बनाते हैं।।
हम भारत के भाग्य विधाता हैं ,
सदा बच्चों की बात बताते हैं।
उनके भविष्य उज्ज्वल करने में ,
सदा अपना पुरुषार्थ दिखाते हैं।।
जिससे भारत का मान बढ़े ,
हम वैसे ही कदम उठाते हैं।
हम शिक्षक ज्ञान के दीपक हैं,
सदा भारत की शान बढ़ाते हैं।।

अमरनाथ त्रिवेदी

उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा , जिला- मुजफ्फरपुर

हस्त प्रक्षालनम्

हस्त प्रक्षालनम्, हस्त प्रक्षालनम्!
फेनकम्, घर्षणम्, हस्तौ घर्षणम्।
हस्तयो: पृष्टाभ्याम् घर्षणम्।।
अंगुल ग्रास घर्षणम्।
जलेन सर्व प्रक्षालनम्!
हस्त प्रक्षालनम्!
पूर्वे भोजनाम्, क्रीड़ा उपरांतम्।
शौचोपरांतम्।
पूर्वे नासा चक्षु स्पर्शणम्।
पूर्वे श्रवण मुखारविंदम्।।
शोभिनीम्, सुहासिनीम्।
नवीन कार्य कारिणीम्।।
स्वच्छ रूप धारिणीम्।
सुखदाम् सुन्दराम्, प्रक्षालनम्!
हस्त प्रक्षालनम्, हस्त प्रक्षालनम्।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज
पटना

व्याख्या कैसे करुँ तेरा,
विस्तार तेरा है सीमित नहीं।
टीओबी है टीम अनूठा,
उदाहरण से वर्णन किंचित नहीं।।
पद्य पंकज और गद्य गुंजन से,
हर रोज सजे इसकी बगियाँ।
दिवस विशेष पर लगता जैसे,
सुशोभित हो पुष्पों से डलियाँ।।
हमारे मन की तो पूछो मत,
अंदर की कला बाहर आई।
कलम की धार चली ऐसे,
जो अब तक न रुक पाई।
एक दिशा मिला कल्पना को मेरी,
टीओबी ने हौसला जगाया।
एक मंच मिला प्रतिभाओं को,
खुद से रु-ब-रु करवाया।।
मन में सकारात्मक ऊर्जा भरा,
हर रोज नया कुछ लिखती हूँ।
मन के सुंदर विचारों को,
कोरे कागज पर रखती हूँ।।
हमारा यह उत्थान किया,
भरपूर मान और सम्मान दिया।
हमारे कौशल को प्रकाशित कर,
कवयित्री मशहूर बना दिया।।

नूतन कुमारी (शिक्षिका)
मध्य विद्यालय चोपड़ा बलुआ
डगरुआ,पूर्णियाँ, बिहार

आदमी और जंगल

बूढ़ा बरगद रो-रोकर, यूं मुझसे कहने लगा!
क्या बिगाड़ा था? क्या बिगाड़ा था हमने?
कि तुम और तुम्हारी जात ने, विकास का नाम दिया,
हमसे और हमारी जात से, यूं ही युद्ध छेड़ दिया।
भाई! तुम आदमी, विचित्र जीव हो इस धरा के।
आगे बढ़ने की होड़ में,
पहले आपस में लड़ते-मरते हो,
फिर कभी साथ मिलकर,
दूसरे जीवों को मारने लगते हो।
बूढ़ा बरगद रो-रोकर, यूं मुझसे कहने लगा!
तुम आदमी विचित्र जीव हो इस धरा के!
तुम्हारे पूर्वजों ने तुम्हें विकास का इतिहास बताया था,
हमारे पूर्वजों ने भी हमें तुम्हारा अत्याचार समझाया था।
उन्होंने हमें बताया –
आदमी का इतिहास कभी
शांति और अहिंसा का नहीं रह पाया था।
आपस में मार-काट करता है –
कभी साम्राज्य विस्तार कर,
कभी धर्म, जाति और नस्ल के नाम पर।
बूढ़ा बरगद रो-रोकर, यूं मुझसे कहने लगा!
तुम आदमी विचित्र जीव हो इस धरा के!
उलझनें अपनी बढ़ाकर,
पहले खुद को फंसाते हो।
फिर बेचैन हो –
न खुद जागते हो, न सोते हो,
न दूसरों को चैन से रहने देते हो।
बूढ़ा बरगद रो-रोकर, यूं मुझसे कहने लगा!
तुम आदमी विचित्र जीव हो इस धरा के!
कभी जंगलों के अधिग्रहण के लिए लड़ते हो,
काटने के लिए झगड़ते हो।
फिर जंगलों के कटने से वर्षा कम होने लगती है,
तो अब पानी के लिए लड़ते-मरते हो।
रोते-रोते बूढ़ा बरगद, भावविह्वल हो गया,
अंत में आंसू पोंछकर यूं मुझसे कहने लगा –
"तुम आदमी इस धरा पर, सबसे अच्छे जीव हो।
खुद प्रफुल्लित होकर जीयो, दूसरों को भी जीने दो।"

संजय कुमार
जिला शिक्षा पदाधिकारी, अररिया

आलोचना एवं समालोचना

आलोचना सत्य हो, रहे उचित आधार,
मन को चोट दे नहीं, बोले मधुर विचार।
कटु वाणी की धार से, न टूटे मनहार,
शब्द वही संजीवनी, जिससे हो उपकार।
कहना सबको चाहिए, हो केवल सत्कार,
सत्य बिना जब निंदा हो, बन जाती अंगार।
शब्द सजे शृंगार से, हो रचना साकार,
समालोचना शीश पर, सजती हो उपहार।
छंद, भाव, अलंकार में, खोजे जो आधार,
वही समीक्षक योग्य है, सुधार करे सार।
कभी न बोले तीर-सा, कभी करे न वार,
हो आलोचक मंत्रवत, हो शांत सरोकार।
यदि हो शब्दों में प्रभा, सच्चा हो आकार,
तो फिर निखरे भाव भी, बन कविता उद्गार।

सुरेश कुमार गौरव
उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा, पटना
(बिहार)

अलख जगाना है

नन्हें-मुन्हें बच्चों में शिक्षा का अलख जगाना है।
राष्ट्र- निर्माता होने का अपना फर्ज निभाना है।।
समाज के दबे-पिछड़ों को शिक्षा का महत्व बताना है।
कुशल शिक्षक होने का अपना फर्ज निभाना है।।
ठान लें हम अगर कि बच्चों में बदलाव लाएंगे।
तो निश्चित हीं हम बच्चों के भविष्य बेहतर कर दिखलाएंगे।।
इसलिए हमे गर्व है कि हम है राष्ट्र- निर्माता।
शिक्षा का जो अनवरत, रहता अलख जगाता।।

मृत्युंजय कुमार

नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला
पताही,पूर्वी चम्पारण

जानकी नवमी

जनक के राज्य में ऐसा भयंकर ग्रीष्म आया था।
सरोवर, खेत सूखे थें, नहीं कोई हल चलाया था।।
किया था खेत शोधन तो वहाँ पर सीत टकराया।
मिला था बंद घट जिसमें, जनक ने अर्भ को पाया।।

यही बैशाख नवमी शुक्ल की है, जानकी नवमी।
दिखाने राह दुनिया को, कभी आयी जहाँ लक्ष्मी।।
जनक के राज में आकर, जगत को राह दिखलायी।
वही सीता, वही लक्ष्मी धरा पर आज है आयी।।

मनाते हैं जहाँ उल्लास से हम-सब समझ नवमी।
सभी संस्कार का आरंभ सिखलाती सदा नवमी।।
सिरध्वज सह सुनयना का हृदय झंकार है नवमी।
धराशायी बुराई, नेह कोमल धीर है नवमी।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज पटना।

मानवता का हित करें

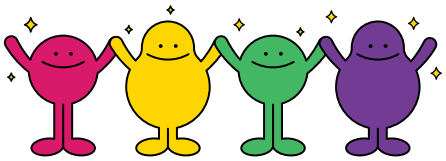

मानवता का हित करें, चलें नेम आचार।
दीन दुखी से प्रेम हो, करिये पर उपकार।।
क्रोध अगर कोई करे, पास न जाएं आप।
मीठी वाणी बोलकर, हरिये फिर संताप।।
मानवता का हित करें, चलिए सच की राह
राह कठिन सच है भले,पूरी होगी चाह।।
मात – पिता को कष्ट दे , करें न गुरु का मान।
ऐसे नर का हे सखे, कैसे हो कल्याण।।
पर स्त्री पर पुरूष गमन, होता है व्यभिचार।
पंच पाप का त्याग कर, यही धर्म आधार।।
सदाचार की राह में,कांटे होंगे मीत।
दर्द भले हमको मिले, फिर भी होगी जीत।।
सबसे ऊपर देश है, करें देश का गान।
राष्ट्रभक्ति में दे दिया, वीरों ने बलिदान।।

मनु कुमारी
मध्य विद्यालय सुरीगाँव, बायसी पूर्णियाँ,बिहार

दहेज

माँ के भला कोख़ में क्यों मरती बेटियाँ,
जन्म लेती नमक क्यों हैं चखती बेटियाँ।
समाज के दरिंदों तुम आवाज़ मेरी सुन,
खुद मरती रहीं तुमको हैं क्यों जनती बेटियाँ।
दहेज की बेदी पर फिर क्यों मरतीं बेटियाँ?
कई रोक – टोक तंज तो हैं सहती बेटियाँ,
दुख बिना ही उफ्फ किये हैं सहती बेटियाँ।
सेवा भी अतिरेक तो हैं करतीं बेटियाँ,
दहेज की बेदी पर फिर क्यों जलती बेटियाँ।
दहेज की बेदी पर फिर क्यों मरतीं बेटियाँ?
तुम क्या करोगे जो न कहीं होंगी बेटियाँ,
मरहम न मिलेगा कहीं जो न होंगी बेटियाँ।
प्यार औऱ दुलार को तरश जाओगे तुम,
जो रौनके बहार नहीं होंगी बेटियाँ।
दहेज की बेदी पर फिर क्यों मरतीं बेटियाँ?
कुदरत की तो सौगात मुकम्मल हैं बेटियाँ,
लक्ष्मी की तो अवतार हैं ये घर की बेटियाँ।
दहेज भी वहीं है और दुल्हन भी हैं वहीं,
शहर की नजरें खास हैं ये प्यारी बेटियाँ।
दहेज की बेदी पर फिर क्यों मरतीं बेटियाँ?
पढ़ती हैं हुनरमंद हैं ये प्यारी बेटियाँ,
समाज और देश को हैं गढ़तीं बेटियाँ।
कहो भला हैं कम कहाँ से और किस कदर,
जल में, थल में, नभ में हैं गरजतीं बेटियाँ।
दहेज की बेदी पर फिर क्यों मरतीं बेटियाँ?
देश का ओलंपिक में मान रखतीं बेटियाँ,
शरहद पर दिलों जान से हैं मरतीं बेटियाँ।
माँ भारती की लाज भी तो रखतीं बेटियाँ,
संघर्ष को विजय में हैं बदलतीं बेटियाँ।
दहेज की बेदी पर फिर क्यों मरतीं बेटियाँ?
उठो कि क्रांति की मशाल हाथ में लिए,
नारी शक्ति का सम्मान साथ में लिए।
घर – घर की तो हैं आन – बान – शान
बेटियाँ, दहेज अब मिटेगा हैं गुमान बेटियाँ।

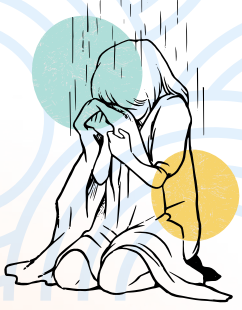

डॉ. स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज कटिहार

सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय

उन्नति करें हम सब यों ही,
सब संभव होगा, है विश्वास,
अग्रणी होगा देश प्रतिपल,
सबका साथ, सबका विकास।
जन-जन का उद्धार हो,
मिट जाए सबकी भूख-प्यास,
ऐसी खुशहाली हो चहुँओर,
सबका साथ, सबका विकास।
परिवार, समाज, देश व राज्य,
गर साथ न हो तो, हो विनाश,
सर्वसम्मति से मिलता है आस,
सबका साथ, सबका विकास।
कल्याणार्थ हेतु आवश्यक है,
सहयोग, लगन व स्वतंत्र प्रयास,
सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय,
नारा लगे और गूँजे आकाश ।

नूतन कुमारी
मध्य विद्यालय चोपड़ा बलुआ
पूर्णियाँ, बिहार

माँ

जीवन की कड़ी धूप में शीतलता का एहसास,
माँ हर रिश्तों से है जुदा बेहद हीं खास,
माँ जीवन की आपाधापी में एक नरम ठाँव,
माँ से ही जुड़ी है जीवन की हर प्यारी आस।
माँ हर विपदा में बनती है सदा ही ढाल,
सहनशक्ति देखो उसकी है कितनी कमाल,
स्नेह और ममता लुटाती है भरपूर वह,
चाहे स्वयं हीं वह रहे किसी भी हाल।
अमृत सदृश लगता है माँ के हाथों से निवाला,
माँ ही पूजा ,माँ ही जन्नत ,माँ ही है शिवाला,
माँ से बढ़कर न कोई इस जग में
माँ ने ही हर मुसीबत को हम पर से टाला।
माँ ही हैं हमारी सबसे अंतरंग सहेली,
जो सुलझाती जीवन की हर कठिन पहेली,
माँ हर कठिन प्रश्न का बन जाती हल है,
नहीं रहने देती कभी बच्चों को अकेली।
माँ ही है हमारे जीवन की नेकियों की कमाई,
माँ के बिना खुशियाँ नहीं देती है दिखाई,
माँ मार्गदर्शक बन सही राह दिखलाती,
माँ के होने से जीवन में कभी कमी नहीं आई।

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय तेनुआ गुठनी
सिवान बिहार

सीतासोहर

सुन्दर सुभग मिथिला धाम से,
पावन पवित्र भूमि रे।
ललना रे जहां बसु राज विदेह,
प्रजा प्रतिपालक रे।
चकमक मिथिलाक मन्दिर,
खहखह लागै गहबर रे।
ललना रे सिया अइली धरती के कोर ,
गाबति माइ सोहर रे।
गदगद राज विदेह,
सुखक नहीं परतर रे।
ललना रे छवि निरखत दिन- रैन ,
लुटावै धन घर पर रे।
गुरूजी देलनि नाम “सीता”,
सिया छनि भवमोचनी रे
ललना रे अद्भुत,अनुपम रूप,
धरि अइली नारायणी रे।
प्रथम दरस रघुवीर,मनहिं प्रीत उपजल रे,
ललना रे करि विनती महागौरी,
श्रीराम वर पाओल रे।
पतिव्रता ब्रह्मचारिणी,
उभयकुल तारिणी रे।
ललना रे बढाओल नारीक मान,
असुर संघारिणी रे।
गुरूजन देलनि आशीष,
सिया भवप्रीता रे,
ललना रे पसरल मिथिला के नाम,
जगत सुपुनीता रे।
“मनु “सिया सोहर गाओल ,
गाबि के सुनाओल रे,
ललना रे राम चरण करि प्रीति,
अमरपुर जायब रे।

मनु कुमारी
विशिष्ट शिक्षिका मध्य विद्यालय सुरीगाँव , बायसी, पूर्णियाँ

ऑपरेशन सिंदूर

भारत माता ने दिया, सबको प्यार दुलार।
लेकिन शत्रु ने किया, घात यहाँ हरबार।।
जाति धर्म को पूछकर, किया पीठ पर वार।
करेंगे उसका सर कलम, कर लेकर तलवार।।
पत्नी के हीं सामने किया जो पति पर वार।
इस जघन्य अपराध का लेंगे हम प्रतिकार।।
निर्दोषों के खून का, बदला होगा खून।
अरे हैवानों चुन- चुनकर देंगे तुमको भून।।
शेर को तू ललकारा जो, उठा है शेर दहाड़।
उसके मुख में जाने को, हो जा अब तैयार।।
सिंदूर नारी का आन है, सिंदूर नारी का प्राण।
बदले में सिंदूर का, लेंगे हम तेरी जान।।
क्रोधित चूड़ी, बिंदी है, पायल की झंकार।
तेरे सिर को काटकर, पहनेगी वह हार।।
सोफिया, व्योमिका ने धरी चंडी का है रूप।
याद करो लक्ष्मीबाई का वह प्रचण्ड स्वरूप।।
तेरे हर अपराध का, दंड देंगे भरपूर।
भारत का सम्मान है, ऑप्रेशन सिंदूर।।

मनु कुमारी
विशिष्ट शिक्षिका मध्य विद्यालय सुरीगाँव , बायसी, पूर्णियाँ

प्रकृति का संदेश

चलो चलें उस शांत वन में,
जहाँ बसी है प्राण धुन में।
पत्तों की बोली बह रही है,
हरियाली के मृदु जतन में।
नदी गुनगुन गीत कहती है,
सागर छिपा है हर कण में।
पक्षी गाते प्रीति की भाषा,
गूंज उठे स्वर ग्राम-गण में।
धरती माँ की सांसें चलतीं,
जैसे दीपक हर जीवन में।
किसने देखा दर्द उसका,
छिपा जो मिट्टी के तन में?
मानव! अब भी वक्त शेष है,
बचाओ मूल प्रकृति-धन में।
प्रकृति नहीं है मात्र साधन,
यह माँ सम है हर जन में।

सुरेश कुमार गौरव"
प्रधानाध्यापक, उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

उठा वीणा बजा डालूँ

उठा वीणा बजा डालूँ ,
सुना मधुमास आया है ।
ये तारें हैं वीणा की ,
मधुर झंकार लाया है ।
खिले हैं फूल चहुँदिस में,
बड़ा संदेश लाया है ।
भँवरें अठखेलियाँ करती ,
चमन में बहार छाया है ।
उठा वीणा बजा डालूँ ,
सुना मधुमास आया है ।
ये तारें हैं वीणा की ,
मधुर झंकार लाया है ।
सुमधुर कोयल की तानें है ,
सर्वत्र मधुमास छाया है ।
बसा लें इसे हर दिल में ,
वासंती पैगाम आया है ।
उठा वीणा बजा डालूँ ,
सुना मधुमास आया है ।

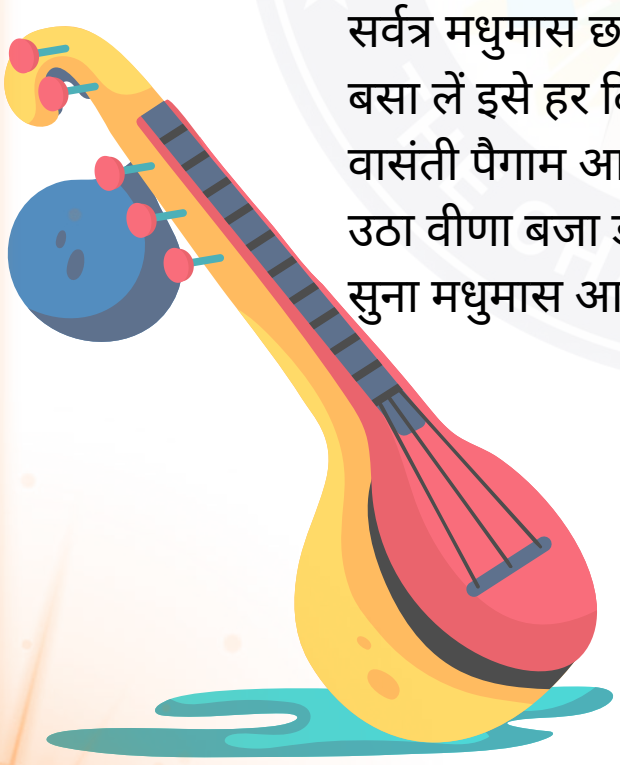

ये तारें हैं वीणा की ,
मधुर झंकार लाया है ।
जहाँ तक है दिखाई देता ,
सजी यह वसंत की नगरी ।
भरे यह प्रेम हर दिल में ,
उठाए प्रेम की गगरी ।
कण कण सृष्टि शोभित है,
वासंती सौंदर्य छाया है ।
उठा वीणा बजा डालूँ ,
सुना मधुमास आया है ।
ये तारें हैं वीणा की ,
मधुर झंकार लाया है ।
सजी है महफिल सी रौनक ,
सर्वत्र संगीत छाया है ।
अभी प्रकृति सुहानी है ,
धरा पर प्यार आया है ।
उठा वीणा बजा डालूँ ,
सुना मधुमास आया है ।
ये तारें है वीणा की ,
मधुर झंकार लाया है ।

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

कौन रुका है?

कौन रुका है?
प्रश्न है कौन रुका है?
सूर्य, मंदाकिनी का चक्कर लगाते,
अवनि, सूर्य का चक्कर लगाती,
मयंक, पृथ्वी का चक्कर लगाता।
फिर बोलो कौन रुका है?
पौधे निरन्तर बढते जाते,
फलित पुष्पित हो जाते,
प्रकाश-संश्लेषण करके,
प्राणवायु भी हैं दे जाते।
फिर बोलो कौन रुका है।
नदियां पयोधि की ओर,
निरन्तर है चलती जाती,
ईति, भीति को हटाकर,
पथ पर है बढती जाती।
फिर बोलो कौन रुका है?
सागर स्थिर है, तथापि,
उसमें तरंगें है उठती,
बड़वाग्नि कभी-कभी,
सागर में है उठ जाती,
दिन रात्रि की ओर
हैं सतत बढ़ता,
तम प्रकाश की ओर,
है सतत बढ़ता।
फिर बोलो कौन रुका है?
तुम जब चलो तो,
तुम चलते हो,
जब बैठो तो,
तेरा मन चलता है।
फिर बोलो कौन रुका है?
रुको, अवश्य रुको,
मर्यादित, शांत, स्थिर,
गंभीर, सहिष्णु बनो,
पर सतत चलो,
श्रेष्ठ और शुभ,
कुछ न कुछ तुम करते रहो ।

गिरीन्द्र मोहन झा

फल, फूल, सब्जी

फल, फूल, सब्जी,
खाइए भरपूर जी।
चीनी, तेल, घी,
खाने से पहले मुँह को लें सी।
ज्यादा न खाओ चावल आलू,
बन जाओगे मोटे भालू।

खाने में लें ज्यादा सब्जी, सलाद,
शरीर में घुसेगा न मोटापा जल्लाद।
सोने से पहले लें गर्म दूध हल्दी,
भागेगा कफ, न होगा सर्दी।
इन सब का अगर रखोगे ध्यान,

न आएगा घर बीमारी मेहमान।

नीतू रानी निवेदिता
म०वि०सुरीगाँव
प्रखंड -बायसी
जिला -पूर्णियाँ बिहार।

शिक्षा का हमारे जीवन में महत्व

शिक्षा से बदलती है तस्वीर।
शिक्षा हीं बदलती है तकदीर।।
शिक्षा का है हमारे जीवन में बड़ा महत्व।
शिक्षा से हीं करना सबसे बड़ा अपनत्व।।
शिक्षा बिना जीवन लगता अधूरा।
शिक्षा हीं करता जीवन का सपना पूरा।।
शिक्षा अपनाओ।
जीवन धन्य बनाओ।।
शिक्षा हीं है अनमोल रत्न।
जीवन का सबसे बड़ा धन।
इसलिए तो कहना है।
शिक्षा के बिना जीवन अधूरा गहना है।।

मृत्युंजय कुमार
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला
पताही,पूर्वी चम्पारण

सिंदूर की चिंगारी

धधक उठा है आज हिमालय, वीरों का है गर्जन।
सिंदूर की ललकार बनी, आतंकी का अब तर्जन।
पहलगाम के अश्रु नहीं, अब खामोश सहेंगे।
शौर्य की इस गाथा से, दुश्मन भी अब सहमेंगे।
नव मिसाइलों की वर्षा से, काँपा दुश्मन का अंबर।
न्याय की इस ज्वाला में, जले आतंक का खंजर।।
राफेल की उड़ान बनी, वीरता की पहचान।
भारत की इस हुँकार से, थर्राया पाकिस्तान।।

अर्जुन केशरी
विद्यालय अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय लोदीपुर
प्रखंड – खरीक
जिला – भागलपुर

स्याही अनुभव की

ज़िंदगी के सफर में ...
बहुत कुछ देखा,
बहुत कुछ सुना,
बहुत कुछ सीखा,
बहुत कुछ समझा।
अरे ! समझा क्या—
अब भी समझना जारी है ...
अनगिनत चेहरों से रोज़ मुख़ातिब होता हूँ,
लाखों बातों से अपने अनुभव बुनता जाता हूँ।
कुछ लोग बरबस मिल ही जाते हैं जीवन में,
चंद शब्दों में हृदय चीर ही जाते हैं।
इतना ही नहीं,
अपनी फुसफुसाहट से आत्मा भी तोड़ जाते हैं,
और अपनी मीठी मुस्कान से
तीखा ज़हर पीछे छोड़ जाते हैं।
मैं सोचता रहा—
दिन-रात सोचता रहा...
मैंने उनका क्या बिगाड़ा था ?
मैंने तो सबको अपना समझा,
सबके लिए अच्छा चाहा।
लेकिन फिर एक दिन यह जाना—
हर कोई अपना नहीं होता,
हर कोई आपका भला नहीं चाहता।
कुछ लोग बस इंतज़ार में होते हैं—
कि तुम गिरो,
और वे थाम लें वो जगह,
जो तुमने बड़ी शिद्दत से कमाई है।
पर एक दिन,
मैंने ठान लिया...
मुस्कुराकर चुप रहना सीख लिया,
हर बात का जवाब न देना जान लिया।
अपनी चुप्पी को अपनी ताक़त बना लिया,
और अपनी ज़िंदगी का रास्ता बदल दिया।
अब अंतर दिखता है—
अपने ही व्यवहार का
पाता हूँ मैं
जब-जब वे ज़हर फैलाते हैं,
मैं गुलाबों की खुशबू में खो जाता हूँ।
उनकी फुसफुसाहट से उनकी ही मनोदशा का
अनुमान लगाता हूँ
फिर मंद-मंद मुस्काता हूँ।
अपनी पसंदीदा किताबों में
किरदार ढूँढता हूँ—
कभी खुद को,
कभी उन्हें।
और जब देखता हूँ
उनके अधोगति का हश्र,
तो बस मंद-मंद मुस्काता हूँ।
जिंदगी का राग-गीत गुनगुनाता हूँ।
सीखा है मैंने ज़िंदगी से—
कुछ रिश्ते छोड़ देने से
ज़िंदगी हल्की हो जाती है।
कुछ कड़वाहट पी जाने से
साँसें गहरी हो जाती हैं।
किसी को जिंदगी से निकाल देने से
जिंदगी खत्म नही होती
जिंदगी शुरू होती है
नए शिरे से, नए सलीके से, नए जज्बे से..
मैने जान लिया है अब...
कुछ खो जाने से
दुख नहीं होता,
जब खुद को पा लेने का परम सुख होता है।
धन्यवाद उस असीम शक्ति का—
जिसने अनुभव का इतना बड़ा संसार दिया,
और अपनी ही कहानी का
मुझे फनकार बना दिया।
और अपनी ही कहानी का मुझे कलमकार बना दिया।
अब मैं टूटता नहीं,
बल्कि खुद को फिर कलम से गढ़ता हूँ
और जब लोग पूछते हैं-
“तुम इतने शांत क्यों हो ?”
तो मैं बस मुस्कुराकर कहता हूँ ....
“अनुभव स्याही की है- बोलती नहीं, पर लिखती बहुत है।”

अवनीश कुमार
व्याख्याता
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, विष्णुपुर, बेगूसराय

आओ अभिनंदन करें

आओ अभिनंदन करें हम ,
देश के वीर जवानों का।
जिसने हमेशा ध्वस्त किया है,
दुश्मन के अरमानों का।।
गूंज उठी है रणभेरी अब,
तिरंगा भी है लहर रहा।
मातृभूमि की रक्षा में ,
सीमाओं पर है सैन्य खड़ा।।
जिनकी सुरक्षा में हैं सोते ,
हम सब चादर तान के।
कोई नहीं बस सैन्य वीर हैं ,
प्यारे हिन्दुस्तान के।।
अस्त्र- शस्त्र से थाल सजाकर,
देश- प्रेम का दीप जलाएँ हम।
उज्जवल भाल पर रक्त लगाकर ,
आओ तिलक लगाएँ हम।।
कसम तुम्हें है माँ बहनों की ,
सिंदूर के सम्मान की।
दुश्मन का सिर काट गिराना,
यह बात है देश के आन की।।
तुम हीं कर्म हो, तुम्हीं धर्म हो,
भारत के अभिमान हो।
राष्ट्रभक्ति की राह में हे वीरों,
तुम करते नित महाप्रयाण हो।
तेरे साहस शौर्य का हम सब,
करते नित जयगान हैं।
गर्व से कहते सबके सम्मुख,
ये सब सैनिक हिंदुस्तान हैं।

मनु कुमारी
विशिष्ट शिक्षिका मध्य विद्यालय सुरीगाँव, बायसी पूर्णियाँ

माँ की बात

माँ की मैं क्या बात बताऊँ,
माँ थीं बहुत ही प्यारी।
मेरे तन मन सब में बसतीं,
माँ मेरी थीं न्यारी।
माँ की मैं क्या बात बताऊँ,
माँ थीं बहुत ही प्यारी।
माँ मेरी बिल्कुल अद्भुत थीं,
गंगा निर्मल पानी।
नीरव जीवन सुंदर चितवन,
थी परियों सी रानी।
माँ की मैं क्या बात बताऊँ,
माँ थीं बहुत ही प्यारी।
कभी गुस्साए मैया मोरी,
सहज तुरन्त थी मानी।
करे दुलार वो ऐसे जैसे,
बिछुड़े वर्षों प्राणी।
माँ की मैं क्या बात बताऊँ,
माँ थीं बहुत ही प्यारी।
हौले हौले सब बतलाती,
सखी थी बहुत सयानी।
पता नही क्यों उसका आँचल,
धरा स्वर्ग रस जानी।
माँ की मैं क्या बात बताऊँ,
माँ थीं बहुत ही प्यारी।
मैं जाया ममतामयी माँ की,
प्रेम सुधा रस जानी।
विदा हुई जब मैं मायके से,
नीर नयन भर पाणी।
माँ की मैं क्या बात बताऊँ,
माँ थीं बहुत ही प्यारी।
कहाँ मैं पाऊँ अपनी मैया,
प्राण वायु कोई प्राणी।
नही कहीं कोई माँ के जैसा,
ढूंढ़ा घट-घट प्राणी।
माँ की मैं क्या बात बताऊँ,
माँ थीं बहुत ही प्यारी।
हृदय ध्यान धरूँ मेरी माँ जब,
अतिआनंद रस जानी।
पुलकित बालक मन आ जाये,
आँचल जुगत बखानी।
माँ की मैं क्या बात बताऊँ,
माँ थीं बहुत ही प्यारी।
अश्रुधार बहता मेरी मैया,
कहूँ दुलार कहानी।
तू जो मुस्काये मेरी मैया,
मन प्रकाश रवि जानी।
माँ की मैं क्या बात बताऊँ,
माँ थीं बहुत ही प्यारी।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज,कटिहार

सुखी कौन ?

जो अपने दिन-रात व्यवस्थित कर ले, सुखी वही है।
जिसका मन फलाफल के प्रति संतुष्ट है, सुखी वही है।।
जो कभी न रुके, सतत बढ़ता जाए, सुखी वही है।
जिसका मन सदा कार्यरत हो, परम सुखी वही है।।
जो हर तरह की दुश्चिंता को जाने दे, सुखी वही है।
जो वर्तमान पर सदा अपना ध्यान केंद्रित करे, सुखी वही है।।
जो आत्मभाव में स्थित होकर रहे, स्थितप्रज्ञ होकर कर्म करे
सदा-सर्वदा सुखी वही है।
अपना कार्य करते हुए जो थोड़ा भी प्रभु का ध्यान करे, सुखी वही है।।
सदा सीखने की इच्छा रखने वाला सदा सुखी है।
जिसमें हो आत्मसंतोष सदा सुखी वही है।।
जो दूसरों की थोड़ी भी भलाई करे वह सदा सुखी है।
जो अपने कार्य से प्रेम करे, निरन्तर आत्मसुधार, आत्मप्रगति करने में
व्यस्त रहे, वह सदा सुखी है।।
जो सदा रहे जागृत्, सतर्क, दुख को भी आनंद बना ले, वह सदा सुखी है।
जीवन के हर क्षण को खुशहाल बना ले, वह सदा सुखी है।।

गिरीन्द्र मोहन झा

सिया के राम आए हैं

मिलन फुलवारी की देखो,
यहाँ सिया के राम छाए हैं।
मिथिला की इन गलियों में,
पाहुन श्रीराम आए हैं ।
जगत कल्याण करने को,
सिया के राम आए हैं।
ये कौशल्या के लाला हैं ,
ये दशरथ दुलारे हैं ।
ऋषि विश्वामित्र हैं गुरुवर ,
जनकपुर धाम लाए हैं ।
जगत कल्याण करने को ,
सिया के राम आए हैं ।
जिधर देखो उनकी बातें ,
मानों जादू चलाए हैं ।
यह वेला पुष्प चुनने की ,
मिलन की आस लाए हैं ।
जगत कल्याण करने को ,
सिया के राम आए हैं ।
मनोहर मुस्कान है उनकी ,
रिझाने मन को आए हैं ।
है धनुष बाण कंधे पर ,
डराने शत्रु आए हैं ।
जगत कल्याण करने को ,
सिया के राम आए हैं ।
मनोहर दर्शन हैं इनके ,
मानो कामदेव छाए हैं ।
उनकी सूरत मोहनी है ,
सभी के हृदय समाए हैं ।
जगत कल्याण करने को ,
सिया के राम आए हैं ।
जन्मों का संग पिया का है ,
उनके प्रभु राम प्यारे हैं ।
बहाना धनुष यज्ञ है केवल ,
मिलन के तार सारे हैं ।
जगत कल्याण करने को ,
सिया के राम आए हैं ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

दुश्मन के नापाक इरादे

ताटंक छंद

दुश्मन के नापाक इरादे, सफल नहीं हो पायेंगे।
बुरी नजर से देखेगा गर, दृष्टिहीन कर आयेंगे।।

अगर राष्ट्र पर वार करेगा, पल में प्रलय मचायेंगे।
बांध तिरंगा सर पे हम फिर, दोजख में पहुँचायेंगे ।।

दुश्मन को दुश्मन की भाषा, में हीं सबक सिखायेंगे।
भारत माता की जय कहकर , युद्ध भूमि में जायेंगे।।

बेटी व्योमिका सोफिया बन, उनको धूल चटायेंगे।
दुश्मन के नापाक इरादे, मिट्टी में मिल जायेंगे।।

अस्त्र-शस्त्र की कमी नहीं है, नाम निशान मिटायेंगे।
दुश्मन को हम मार गिराके ,अमन शांति ले आयेंगे।।

सेना कितनी पराक्रमी है, दुश्मन को दिखलायेंगे।
प्यारा भारत वर्ष हमारा, यह जग को बतलायेंगे।।

चूड़ी बिंदी क्या होती है , दुश्मन को बतलायेंगे।
चुटकी भर सिंदूर है शक्ति, ये अरि को दिखलायेंगे।।

मनु कुमारी
मध्य विद्यालय सुरीगाँव, बायसी पूर्णियाँ,बिहार

माँ-जीवन की ममता मूरत

तेरी दुआओं की छाया में पलते,
जीवन के काँटे भी फूलों सा छलते।
तेरी ही ममता है साँसों में बहती,
हर दर्द में भी तेरी छवि है रहती।

माँ, तू धूप में छांवों सी लगती,
जैसे अंधेरों में दीपक सी जगती।
तेरे बिना सूनी हर एक कहानी,
तू ही तो जीवन की सच्ची रवानी।

तूने सिखाया था चलना संभलना,
गिरते हुए भी न रोना, न रुकना।
तेरे चरणों में स्वर्ग का प्याला,
तेरे बिना तो कुछ नहीं निराला।

तेरी लोरी में गूँजे स्वर सुरमय,
तेरी गोद बने मंदिर सा पवित्रमय।
जब भी मैं टूटा, तूने सँवारा,
हर दर्द में तूने खुद से उबारा।

माँ, तेरे आँचल की शीतल घटा से,
जीवन में मिलती दिशा और रास्ते।
तेरे बिना सब अधूरा है लगता,
तू है तो मेरा हर क्षण सुखद बनता।

सुरेश कुमार गौरव
प्रधानाध्यापक
उ.म.वि. रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

मनहरण घनाक्षरी विधान

घोटक की चले टाप,
आठ-आठ पग नाप,
पद को बनाए आप, तुकांत बखानिए।
आठ पग चले तीन,
चौथी चलें सात गिन,
चार पद रचें लीन, चरण है जानिए।
इक्कतीस रहे वर्ण,
चरण सदृश पर्ण,
चार हीं चरण पूर्ण, घनाक्षरी मानिए।
गुर-लघु-गुरु अंत,
अनिवार्य चरणान्त,
मनहरण नितांत, लय पहचानिए।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

मेरी मुन्नी

बाल कविता

सुबह खिड़की जब खोली माई,
सूरज की किरणें थी आई।
मुन्नी आँखें खोल न पाई,
मईया ने आवाज लगाई।।
आँखें मींचकर मुन्नी उठी,
मईया से जैसे हो रुठी।
पीकर दूध मीठी-मीठी,
बातें करने लगी अनूठी।।
खुद से हीं पुस्तक को खोली,
देख, प्यार से मईया बोली।
दिल की अपनी राज खोली,
तुम हो कितनी सीधी भोली।।
बिटिया मेरी बात सुनो,
आलस मन में नहीं बुनो।
सुबह-सवेरे उठना चुनो,
तन-मन में स्वास्थ्य को गुनों।।
आलस से सुख होता नष्ट,
फिर जीवन में मिलता कष्ट।
धर्म-कर्म न करना भ्रष्ट,
सौम्य, सुशील रहो स्पष्ट।।
तुमसे महके बगिया मेरी,
चहके हरपल जीवन तेरी।
तू है मेरे मान की टेरी,
तू हीं है जीवन की नेरी।।
टेरी – शाखा,
नेरी- प्रकाश

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

माता का सम्मान हमेशा

कन्याओं को जब रहने दोगे ,
तभी तो माँ बन पाएगी ।
उदर में ही खत्म करने पर तुले अगर हो
तो फिर कैसे माता का फर्ज निभाएगी !
एक स्त्री का माता बनना ,
उसका नैसर्गिक अधिकार है ।
इसके सिवा यदि सब कुछ हो
तो भी उसका प्रतिकार है ।
माँ के आँचल में जो सुख मिलता ,
उसे कहाँ से ढूँढ के लाओगे ?
यदि लिंग भेद की कुदृष्टि बनी रही
तो कभी चैन नहीं तुम पाओगे ।
माता का स्थान हमेशा
स्वर्ग से भी ऊपर है ।
इस बात का सदैव ध्यान रखो ,
नहीं तो सारी दुनिया ही ऊसर है ।
दिल न दुखाना कभी माता का ,
वह देवी माँ की सूरत हैं ।
क्रोध न कभी उनपर करना ,
साक्षात् लक्ष्मी की ही मूरत हैं ।
आशीर्वाद लेते रहना सदा माता का
तभी तो तुम कुछ बन पाओगे ।
असली तरक्की तुम्हारी तभी बनेगी ,
जब उन्हें पल- पल सम्मान दिलाओगे ।
मातृ दिवस तो केवल संकेतक ,
हमें आजीवन ऋणी रहना है ।
यदि कुछ भी कह दें बात कभी
तो सब कुछ धैर्यपूर्वक ही सहना है ।
ख्याल करो उनके सुख दु:ख का
और माता का सदा ध्यान धरो।
इस जग में तुम्हारे जीवन दात्री,
हरदम उनका सम्मान करो ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा

महाराणा प्रताप

राजस्थान के मेवाड़ में, सिसोदिया राजवंश था।
वीर उदय सिंह द्वितीय का, जन्म लिया एक अंश था।।
जयवंता बाई सोनगरा, क्षत्रिय नाम सुमार था।
जिनके पावन गर्भ को, जाना सकल संसार था।।
साल पंद्रह सौ चालीस, मई का पावन माह था।
नौ तारीख इतिहास में, खुशी दे गया अथाह था।।
भारत पर शासन करते, मुगल राजवंश था।
मेवाड़ स्वतंत्र रूप में, देता जिन्हें दंश था।।
बचपन से हीं वें धीर- वीर, सैन्य कला निपुण थें।
महाराणा में कुशल प्रशासक के मौजूद सारे गुण थें।।
घोड़े की सवारी करना, उनको बहुत पसंद था।
चेतक नाम का घोड़ा भी, संग में तीव्र, अक्लमंद था।।
अकबर की विशाल सेना को, वीरता से हराया था।
दुस्समय कुछ ऐसा आया कि वन में जीवन बिताया था।।
कंद- मूल, फल, फूल संग घास की रोटी खाया था।
मातृभूमि के लिए जिसने, अपना सर्वस्व लुटाया था।।
आओ नमन करें उन्हें, जिनसे भारत का मान बढ़ा।
दु:ख होता है कि हमनें, इनका जीवन- वृत थोड़ा पढ़ा।।
जीवन जिसका है पूरा, गाथाओं से भरा हुआ।
महाराणा पर पाठक, गर्व लिए सिर खड़ा हुआ।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

माँ

माँ
माँ!
सुंदर !
बहुत सुंदर,
शब्द ब्रम्ह समाया,
अंतस्थ अन्तर्मन रोम-रोम,
स्पंदन, समर्पण, सुंदर, सुरभित चितवन!

माँ!
मेरी संगिनी,
प्रेम की रागिनी,
दुलार की अद्भुत सरिता,
प्रेमाश्रु की अथाह मीठी नदी।

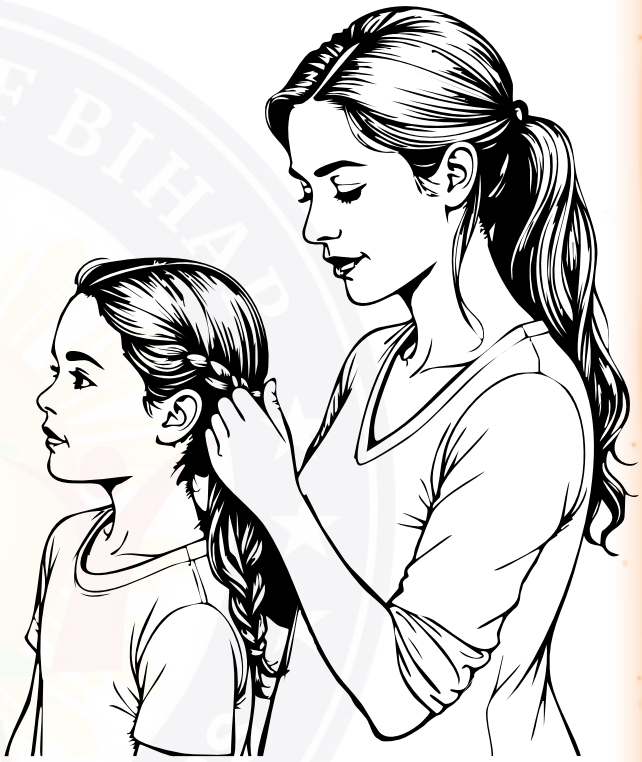

माँ!
कोमल स्पर्श,
ममता का दर्प
हरती है सब दंश,
मैं तो माँ का अंश।

माँ!
बसती मुझमें,
मैं सँवरती उससे,
माँ जैसी लगती हूँ ?
आईने से पूछती हूँ हमेशा!

माँ!
मुस्कुराती मुझमे,
सहलाती है मुझे,
गुदगुदाती और दुलारती है,
मुझे बहुत याद आती है।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज कटिहार

माँ का प्यार

लावणी छंद

माँ का प्यार दुलार जगत में, बड़ा अनमोल होता है।
माँ के चरणों में पड़ते तो, सुरपुर लगता छोटा है।।
जग के पालक भी आए थे, माता की ममता पाने।
माँ की महिमा को गाते जो, वेद शास्त्र हम-सब जाने।।
सात समुद्र की मसि बनाकर, लिखने की कोशिश करना।
लगता मुश्किल है जैसे हीं, सूखे में नौका चलना।।
जिसका वर्णन कर पाने में, शारदा भी लाचार है।
उसका वर्णन कैसे होगा, पाठक करता विचार है।।
माँ ममता का रूप सदा हीं, जो सृष्टि का आधार है।
जिसके कदमों में जन्नत है, आंचल सदा संसार है।।
दिवस विशेष और शब्दों से, माँ की क्या गुणगान करें।
कुछ भी कह लो कम हीं होगा, अर्पण तन-मन प्यार करे।।
माँ की ईच्छा खुशी हमारी, रखिए इसका मान सभी।
माँ के चेहरे से एक पल, मिटे नहीं मुस्कान कभी।।
हम भी खुश, माँ भी खुश हरपल, यही माँ का सम्मान है।
इतना सा जो पुण्य कमा ले, वह देवों से महान है।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज
पटना।

Teddy Bear Teddy Bear

Teddy Bear, Teddy Bear, Where
Are You?
Teddy bear, teddy bear,
Where are you?
I'm looking around
To play with you!

Are you behind the table?
No, no — not there!
Ha ha! I'll keep looking
Everywhere!

Maybe in my uncle's room?
No, no — not here!
Ha ha! You're hiding,
That's very clear!

Whoa ho! Look who's here —
Yes, it's you!
I caught you now,
You're naughty too!

Awanish kumar
Bihar Education Service (Research and Training)
LECTURER
PTEC vishnupur,Begusarai

सत्य अहिंसा का राही

आत्मतत्व की ज्योति पाने, जब कोई अकुलाता है ।
सत्य अहिंसा का राही तब, गौतम बुद्ध बन जाता है ।।

जन्म-जरा और मृत्यु से, सिद्धार्थ का मन घबराया था।
सुख-सुविधाओं में पलकर भी, विलासी मन न भाया था।।
पत्नी, पुत्र का मोह त्यागकर, चल पड़ा बनने संन्यासी।
रूप-मोह का बंधन भी, गौतम को बाँध न पाया था।।
दृढ़-निश्चय कर चलनेवाला, जग को राह दिखाता है ।
सत्य अहिंसा का राही तब, गौतम बुद्ध बन जाता है ।।

देववृक्ष पीपल ने बुद्ध को, ज्ञान का बोध कराया था।
प्राणवायु की शीतलता ने, शांतिमंत्र गूँजाया था।।
काम क्रोध, तम की ज्वाला, भष्म हुई थी क्षणभर में।
इंद्रजीत के शांतिदूत का, रूप निखरकर आया था।।
अपने दीपक आप बनो यह, मंत्र हमें सिखलाता है ।
सत्य अहिंसा का राही तब, गौतम बुद्ध बन जाता है ।।

बुद्धं शरणं गच्छामि को, पुनः विश्व यदि अपनाएगा।
देव-दुर्लभ मनुज तन को फिर, यूँ ही नहीं गँवाएगा।।
ध्यान, ज्ञान, नैतिकता जैसे, सुंदर पुष्प खिलाएँगे।
मगध भूमि में दुर्लभ पुष्प यह, विश्व धरा महकाएँगे।।
प्रेम, क्षमा के दानी को जग, शत्-शत् शीश झुकाता है।
सत्य अहिंसा का राही तब, गौतम बुद्ध बन जाता है ।।

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी ,नालंदा

कर्म

धर्म का राह कभी सरल नहीं होता,
अधर्म से बड़ा कोई हलाहल नहीं होता
युगों – युगों तक स्मरण करें हर कोई,
यह मार्ग इतना अविरल नहीं होता।

सद्कर्म की पराकाष्ठा हो ऐसी,
अनंत काल की निष्ठा हो जैसी,
फल मिलता है हमारे हर कर्मों का,
हमारे ज़ीवन की भूमिका हो जैसी।

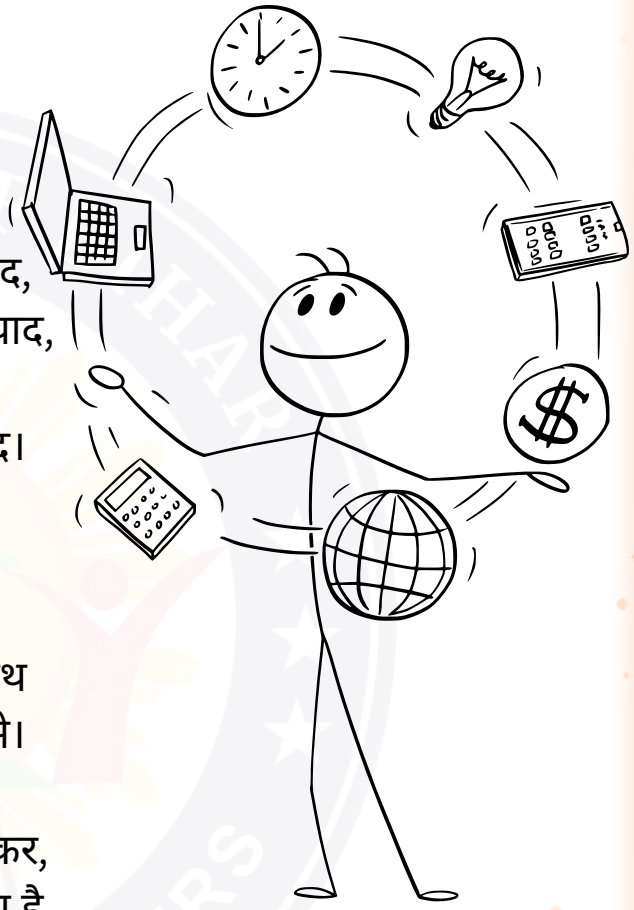

बालि ने स्वीकारा नहीं सुग्रीव का संवाद,
हिरण्यकशिपु नहीं माना बेटे की फ़रियाद,
कुरुवंश का नाश था धर्म से विवाद।
श्रीकृष्ण ने किया धर्मयुद्ध का शंखनाद।

सर्वस्व नाश हुआ सिर्फ अपने कर्म से,
रणक्षेत्र ने प्राण छीना सूर्यपुत्र कर्ण से,
महान योद्धा कर्ण, दिया अधर्म का साथ
सब जीता जा सकता था केवल धर्म से।

राजा सत्यवादी हरिश्चंद्र की गाथा पढ़कर,
अंजुली भर अश्रु से रुह काँप सा जाता है,
उनके सत्कर्मों से बड़ी गहरी सीख मिली,
कर्म के लिए सर्वस्व त्याग दिया जाता है।

आत्मा का परमात्मा से मिलन हो जाए,
कर्म करो सच्चा तो सब संभव हो जाए,
जो मेरे अंतिम यात्रा में साथ-साथ जाए,
कर्म ही हमारे जीवन का सार बन जाए।

नूतन कुमारी
मध्य विद्यालय चोपड़ा बलुआ
पूर्णियाँ, बिहार

बुद्धत्व की प्राप्ति

बड़ा लक्ष्य जिन्हें पाना हो ,
छोटी-छोटी बातों पर भी ध्यान दिया करते ।

जिन्हें अपने पर विजय पाना हो ,
वे कभी विलासी बातों में नहीं रमते ।।

सिद्धार्थ राजा के राज दुलारे थे ,
वहाँ भौतिक सुख भी सारे थे ।

कोई चिंता नहीं किसी बात की थी ,
वे पिता के नयनों के भी तारे थे ।।

प्रासाद में उनका मन बहलाने को ,
कई सुंदरी युवतियाँ प्यारी थीं ।

अपनी पत्नी सुंदरी यशोधरा भी ,
वह सहज सौम्य सुकुमारी थी ।।

एक बार वृद्ध आदमी को देखा ,
उसका बुखार से तन था काँप रहा ।

उसके वसन थे आधे फटे हुए ,
वह किसी तरह तन को झाँप रहा ।।

सिद्धार्थ ने कभी ऐसा अभिशाप न देखा था ।
इस दुःख दरिद्रता को कभी न लेखा था ।।

सो मन में उठा ज्वार प्रवर।
वह पहुँच गया मस्तिष्क शिखर ।।

उन्हें अब एक ही धुन लगी रहती ।
क्यों दुनिया शोकग्रस्त रहती ?

जन्म , जरा , मरण के चक्कर से ,
लोग पार क्यों न पाते हैं ?

मोह माया की इस नगरी में ,
वे उलझ- उलझ क्यों रह जाते हैं ?

करुणा की इस देदीप्य मूर्त्ति ने ,
एक दिन सचमुच ही गृह त्याग दिया ।

फिर नित्य भिक्षाटन से ही ,
उदर पोषण भी अपना शुरू किया ।।

अब एक ही लक्ष्य था, उनके जीवन का ।
केवल आत्म- तत्व के शोधन का ।।

घूमते- घूमते वे गया आए ,
आत्म- तत्त्व के लिए यहीं ध्याए।

सिद्धार्थ यहीं बुद्धत्व को प्राप्त हुए ,
जीवन के असली मर्म से आप्त हुए ।।

उनके उपदेश में अहिंसा व करुणा की वाणी है ,
इच्छा और तृष्णा ही दुःख की बड़ी निशानी है ।

आज हम सब भी उनके उपदेशों पर चलकर ,
जीवन को सदवृति, सन्मार्ग की ओर मोड़ चलें ।

यह जीवन मानवीय मूल्यों को जीवित रखने का
हम सब कदम बढ़ाए उस ओर चलें ।

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

धर्मचक्र प्रवर्तन सिखलाएं

सारनाथ की पुण्य धरा पर,
सूर्य उठा फिर ज्ञान गगन पर।
पाँच भिक्षु जब पास आए,
विनय भाव से शीश झुकाए॥

बुद्ध ने वाणी मधुर सुनाई,
करुणा, सत्य, नीति समझाई।
न मध्यम से हटना जीवन,
अति न भोग, न तप का बंधन॥

“दुख है, दुख का हेतु वही है,
तृष्णा ही बंधन की गही है।
दुख निरोध का पथ है सच्चा,
धम्म पथ ही जीवन अच्छा।”

अष्टांगिक वह मार्ग बताया,
सत्य-समाधि का दीप जलाया।
दृष्टि, संकल्प, वाणी, आचार-
सबमें हो निर्मल व्यवहार॥

सम्यक कर्म, सम्यक स्मृति से,
मन शुद्ध हो श्रद्धा प्रीति से।
सम्यक ध्यान जब लय में बहता,
मुक्ति का वह द्वार कहता॥

धर्मचक्र तब घूम पड़ा था,
मौन गगन भी झूम पड़ा था।
ब्रह्मा, इंद्र समेत सुरगण,
झुके बुद्ध के चरणों के संग॥

ज्ञान बना वह विश्व का प्रकाश,
बन गया जग में धर्म निवास।
ध्यान-सत्य की जय जयकार,
करुणा लहराए तब बारंबार॥

सुरेश कुमार गौरव,

प्रधानाध्यापक, उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

बुद्धं शरणं गच्छाम:

बुद्धं शरणं गच्छाम:।
संघं शरणं गच्छाम:।।

चत्वारि आर्यसत्यानि,
जीव जीवने संगानि,
दु:खं, दु:खस्य कारणं वा,
निरोधं, निरोधगामिनीं प्रतिपदा।

बुद्धं शरणं गच्छाम:।
संघं शरणं गच्छाम:।।

अहिंसा, अस्तेय, कामेच्छा वर्जनम्,
अनृतं च त्यजेत् व्यसनम्।
पंचशीला: प्रबोधन्ते।
जना: सुखं भोगयन्ते।।

बुद्धं शरणं गच्छाम:।
संघं शरणं गच्छाम:।।

सम्यक दृष्टि, संकल्पं,
वाक्, कर्म च जीविका,
व्यायाम, स्मृति, समाधिर्नाम्
प्रज्ञा, शील प्रबोधका:।
अष्टांगयोग सेवन्ते।
मध्यमार्गी भविष्यन्ते।।

बुद्धं शरणं गच्छाम:।
संघं शरणं गच्छाम:।।

राम किशोर पाठक:

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

जंग अभी बाकी है

जंग अभी बाकी है
रंग अभी बाकी है,
बहनों के माँग उजारने वालों का
कर्मकांड अभी बाकी है।
जंग अभी बाकी है
रंग अभी———२।

जाति पूछकर मारा तुने
गोली से धूना तूने ,
ये सबका बदला तुझसे
लेना अभी बाकी है,
जंग अभी बाकी है
रंग अभी———२।

सुनो आतंकवादी सुनो
सुनकर तुम थोड़ा गुणों,
तेरी पत्नी का चिल्लाना,
रोना बाकी है।
जंग अभी बाकी है
रंग अभी ———२।

भारत की आवाज सुनो
सुनकर अपना सिर को धुनों,
तेरे घर सैकड़ों लाशों का
ढ़ेर लगना बाकी है।
जंग अभी बाकी है
रंग अभी———२।

ऑपरेशन सिंदूर का पहला
ये झाँकी है
टेलर अभी हुआ है फिल्म
अभी बाकी है,
तुम और तुम्हारे साथी का
खानदान अभी बाकी है।
जंग अभी बाकी है
रंग अभी बाकी है।

ऑपरेशन अभी बाकी है
सिलाई अभी बाकी है,
दुश्मन को मारने का
दवाई अभी बाकी है।
जंग अभी बाकी है
रंग अभी———२।

जान अभी बाकी है
प्राण अभी बाकी है,
आतंकवादियों को उड़ाने का
स्थान अभी बाकी है।
जंग अभी बाकी —२।

नीतू रानी निवेदिता
म०वि०सुरीगाँव
प्रखंड -बायसी
जिला -पूर्णियाँ बिहार।

Appreciating Rhymes

Let's have a fun
Either you sit or run

Let's have a try
Nothing is lie

Let's be positive
God is your relative

Let's work hard
You are not a coward

Let's try not to sin
Sure, you can win

Let's mind a trend
All is not your friend

Let's choose a good look
Always keep a book

Let's remain curious
You will be genius

Let's pray your parent
It grows your talent

Let's enjoy the life
Suicide is a crime

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया, इंगलिश पालीगंज, पटना

खोज अभियान में

कल रात सीमा पार,
सेना भी पहुँच कर,
बंकर तबाह किया,
जाके पाकिस्तान में।
लाशों का अंबार लगा,
मातम है चहुँओर,
विलखते परिजन,
भीड़ कब्रिस्तान में।
बन गया खंडहर,
शहरें तबाह कई,
छुप कर विदेश में,
जियो अपमान में।
घाटियों में छुप कर,
करता है छद्म वार,
लगी है हमारी फौज,
खोज अभियान में।

एस.के.पूनम
प्रा.वि.बेलदारी टोला, फुलवारी शरीफ,
पटना।

मातृ दिवस

पिता देखता है स्वप्न,
मेरा बेटा नाम करे,
शुभ-श्रेष्ठ काम करे,
प्राध्यापक, जिलाधिकारी बने,
हृदय में होता प्यार, मुख पर अमृतवचन,
ये वचन देते पग-पग पर, शिक्षा संग शासन,

माँ चाहती है, मेरा बेटा शिक्षित बने,
मनुष्य बनकर जीए, श्रेष्ठ कुछ काम करे,
हर असफलता पर ममता का हाथ फेरती,
चिंता मन में दबाये चिंता से रोकती,
सर्वदा खुश रहने की प्रेरणा देती,
खुद बच्चों का जामवंत बनती,
उसे प्रयासार्थ प्रेरित है करती,

क्या दे सकता हूँ अपनी माँ को मैं,
जो मेरी खुशी छोड़ कुछ न चाहा,
मेरी खुशी में ही खुद की खुशी पाया,
मेरे लिए कुर्बान उसकी धूप और छाया,

मैंने सोचा, मैं क्या दूं माँ को,
क्या दे सकता है कोई माता-पिता को,
धन्य जन्म है उसका जिसका चरित सुन,
माता-पिता का हृदय गदगद हो उठे,
जो अपने सुकृत्यों से उनका नाम कर सके ।

गिरीन्द्र मोहन झा
+२ भागीरथ उच्च विद्यालय, चैनपुर-पड़री,
सहरसा

मोहनी माया

विधा गीत

उलझे रहते हम-सब हरपल, चलता न बुद्धि बल है।
सदा सजग रहना माया से, माया बड़ी प्रबल है।।

अपना सा आभास कराता, हरपल भ्रम फैलाता।
रिश्तों नातों में उलझे हम, सत्य समझ कब आता।।
अश्क नयन में डेरा डाले, मिलता ज्यों हीं छल है।
सदा सजग रहना माया से, माया बड़ी प्रबल है।।०१।।

रहे सहेज जतन से वैभव, जीवन अंग बनाया।
समय कभी जो रंग दिखाए, काम नहीं कुछ आया।।
फिर भी उसकी हीं चिंता में, घायल हम प्रति- पल है।
सदा सजग रहना माया से, माया बड़ी प्रबल है।।०२।।

पाप-पुण्य की सोंचा करते, भँवर जाल में फँसते।
जिससे बचकर रहना होता, वही काम हम करते।।
दृष्टि भ्रम है ऐसा होता, मानो हम निश्छल है।
सदा सजग रहना माया से, माया बड़ी प्रबल है।।०३।।

कोई भाव नहीं हो मन में, कर्म निरंतर करना।
राम नाम का आश्रय लेकर, उन्हें समर्पण करना।।
जीव वही इससे बच पाता, जिसे राम का बल है।
सदा सजग रहना माया से, माया बहुत प्रबल है।।०४।।

अगर माया से मुक्ति चाहे, शंकर का ध्यान करें।
मायापति बस वही जगत में, जो कृपा प्रदान करें।।
सहज नहीं माया से बचना, लगता भले सरल है।
सदा सजग रहना माया से, माया बड़ी प्रबल है।।०५।।

राम किशोर पाठक

सियारामपुर पालीगंज पटना

अच्छा मौका खो दिया

कुण्डलिया छंद

(०१)
अच्छा मौका खो दिया, हमनें उनके पास।
लौट वहाँ से आ गया, किया नहीं कुछ खास।।
किया नहीं कुछ खास, मिटा संशय कुछ मेरा।
पर अब भी कुछ प्रश्न, लगाता मन में फेरा।।
कोई हो हालात, मिले प्रश्नों का लच्छा।
रखें ईश विश्वास, कहूँ सब होगा अच्छा।।
(०२)
कितने मौके खो गयें, संशय हुआ न अंत।
व्याकुलता मन में सदा, कहते सारे संत।।
कहते सारे संत, चूक जो मौका जाता।
रोता किस्मत मान, नहीं अवसर फिर पाता।।
समाधान फिर भूल, गिनाता कारण जितने।
सबका है यह मूल, सुअवसर खोया कितने।।
(०३)
खोयें मौके हैं कई, जिसका पश्चाताप।
उसी वजह से आज भी, मिलता हर संताप।।
मिलता हर संताप, सदा कर्मो से उपजे।
समय हुआ प्रतिकूल, केशरी जैसे गरजे।।
हुआ बहुत है भूल, सोचकर हरपल रोयें।
नहीं मिला है लक्ष्य, कई हैं मौके खोयें।।

राम किशोर पाठक

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज
पटना

पर्यावरण संरक्षण

भाईयों वृक्ष लगाना, बहनों वृक्ष लगाना।
पर्यावरण सुरक्षा में सब मिलकर हाथ बढ़ाना ।।
भाईयों वृक्ष लगाना, बहनों वृक्ष लगाना..
जल पर हीं है जीवन सारा,जल को रोज बचाएँ ।
जल संरक्षण के विविध तरीके, आओ हम अपनाएँ।।
कूड़े- कचड़े का इधर-उधर,न कोई ढेर लगाना।।
भाईयों वृक्ष लगाना,बहनों वृक्ष लगाना ।
पादप से हीं पाते हैं हम, फल-फूल-सब्जी बहना।
पादप से मिलता है भोजन, यही हमारा कहना ।
पादप-जन्तु की सुरक्षा का, हर दायित्व निभाना।।
भाईयों वृक्ष लगाना, बहनों वृक्ष लगाना।
पेड़- पौधे से शुद्ध वायु, मिलता है मेरे भाई।
स्वार्थ पूर्ति के लिए न करना, इनकी कभी कटाई।
जन्मदिन या अन्य अवसर पर, पौधे सदा लगाना।।
भाईयों वृक्ष लगाना,बहनों वृक्ष लगाना ...
पर्यावरण में शामिल है सुन,जल जीवन हरियाली।
इन्हें देखकर खुश होते हैं , जीवन भर वनमाली ।
पर्यावरण संरक्षण में अब 'इको' अभियान चलाना।।
भाईयों वृक्ष लगाना,बहनों वृक्ष लगाना...
वन्यजीव की रक्षा करना, इसे न मार भगाना।
नदियों की सुरक्षा करना, कभी न कटने देना।
विभिन्न प्रदूषण से बचना,जल थल,नभ स्वच्छ बनाना।।
भाईयों वृक्ष लगाना,बहनों वृक्ष लगाना...
नशामुक्ति की बातें,नुक्कड़ नाटक कर समझाना।
धरती माँ की रक्षा करना,कभी न रोने देना।
पर्यावरण संरक्षण कर,अब जीवन धन्य बनाना।।
भाईयों वृक्ष लगाना,बहनों वृक्ष लगाना।।

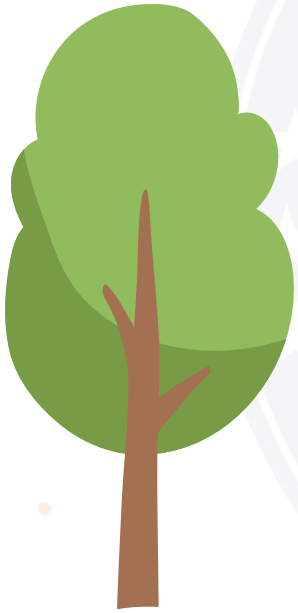

मनु कुमारी
मध्य विद्यालय सुरीगाँव, बायसी, पूर्णियाँ
बिहार

कर्तव्य बिना अधिकार नहीं

कर्त्तव्य बिना अधिकार नहीं ,
इस जीव जगत के पार नहीं।
यह जीवन की ऐसी थाती है,
कभी इसके बिना स्वीकार नहीं ।
परिस्थितियां चाहे जैसी हों ,
मनुज का कर्त्तव्य पहले आता।
विवेकी पुरुष का निर्मल चित्त,
कर्त्तव्य में सदा रमा रहता।
यह दुर्व्यसनों को हरता है ,
कुचक्रों को दूर भगाता है।
कर्त्तव्यों में रुचि लेने से,
अपना भी दिल बहलता है।
अधिकार तो एक दिन मिलना है ,
जब कर्त्तव्य अपना मुख खोलता है।
हौसलें की नई- नई उड़ानों को,
वह हँस- हँस कर भी कुछ बोलता है।
कर्त्तव्य ऐसा तुम कर जाओ,
जो अधिकार सरीखा बढ़ता है।
संयम और अनुशासन से,
यह अमित पराक्रम गढ़ता है।
अधिकार के लिए क्यों मरता मानव ,
वह स्वयं चल कर पास आता है ।
जब कर्त्तव्य बने उस सीमा तक ,
निश्चित हीं अधिकार की खुशबू लाता है ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

सफल बनो

प्यारे बच्चों, बनो सफल,
श्रम से होते, सभी सबल,
रुकों नहीं तुम, चलो निकल,
श्रेष्ठ सीख का, करो अमल।
बनना तुमको, वीर प्रवर,
रोके कोई, नहीं भँवर,
सपने जाए, नहीं बिखर,
चढ़ना तुमको, उच्च शिखर।
क्यों संशय को, चुनें इधर,
कंटक पथ पर, चलो जिधर,
सुमन बिछाते, सभी किधर,
भटक न जाओ, इधर-उधर।
सद्कर्मों पर, तुम चलकर,
बनना खुद से, है रहवर,
चलते जाओ, निज पथपर,
बैठ न जाना, तुम थककर।
सुंदर पथ का, करो सृजन,
रखना अपना, हरा चमन,
श्रेष्ठ जनों को, करो नमन,
तुमपर करता, गर्व वतन।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज पटना।

कर ले तू उपकार ओ बंदे

करले तू उपकार ओ बंदे,
तेरा जन्म सफल हो जाएगा ।
यह सुंदर तन नश्वर है बन्दे,
एक दिन मिट्टी में मिल जाएगा।
मानव तन बड़े भाग्य से पाया ,
इसे न व्यर्थ गँवाना तुम ।
दीन- दुखी की सेवा करके,
मानव धर्म निभाना तुम ।
करके दीन की सेवा एक दिन,
सब पुरूषार्थ तू पाएगा।
करले तू उपकार ओ बंदे,
तेरा जीवन सफल हो जाएगा।
मानव का तो धर्म यही है,
सदा हीं पर उपकार करे।
दया, दान करूणा से वह,
दीन दुखियों की पीड़ हरे।
क्या लेकर तू आया बंदे,
और क्या लेकर तू जाएगा।

करले तू उपकार ओ बंदे,
तेरा जन्म सफल हो जाएगा।
परोपकार सा पुण्य न कोई ,
वेद पुराण ये कहता है ।
दीन – दुखी के अन्तर्मन में,
वह परमात्मा रहता है।
भूखे -प्यासे को अन्न- जल देकर
उसका हृदय जुड़ाएगा।
करले तू उपकार ओ बंदे ,
तेरा जन्म सफल हो जाएगा।
लाख चौरासी पार कर आया ,
अब तो नर शुभ- कर्म करो।
सदाचार की राह पकड़ कर,
सच्चे गुरु के चरण धरो ।
गुरु ज्ञान पाकर तुम फिर से,
आवागमन नसाएगा।
करले तू उपकार ओ बंदे,
तेरा जन्म सफल हो जाएगा।

मनु कुमारी
मध्य विद्यालय सुरीगाँव ,बायसी
पूर्णियाँ

मंजिल हीं एक ठिकाना है

मंजिल तक हमको जाना है
चलना तो एक बहाना है,
मंजिल ही एक ठिकाना है।
पैरों के छाले मत देखो,
मंजिल तक हमको जाना है।
चलना तो एक बहाना है..
नित नया सबेरा आता है,
मन यौवन फिर लहराता है।
न है परवाह अब बाधा की,
मंजिल तक हमको जाना है।
चलना तो एक बहाना है..
विश्राम कहाँ, आराम कहाँ,
गति ही जीवन अब श्रांत कहाँ।
रुकना निज धर्म नहीं सुन लो,
मंजिल तक हमको जाना है।
चलना तो एक बहाना है..
संकट कितना भी गहरा हो,
क्यों न गहनतम पहरा हो।
हमसबनें मिलकर ठाना है,
मंजिल तक हमको जाना है।
चलना तो एक बहाना है..
सुन जीत हमारी पक्की है,
चलने की धुन तो सच्ची है।
विजयी प्रयाण हमारा है,
मंजिल तक हमको जाना है।
चलना तो एक बहाना है..

डॉ स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज
कटिहार

चंदा मामा और तितली रानी

चंदा मामा आए नभ में, चुपके से मुस्काए।
तारों की महफिल में आकर, मीठे गीत सुनाए।।
नीली-पीली तितली रानी, फूलों पर इतराई।
चंद सफर की उसकी इच्छा, मन ही मन मुस्काई।।
बोली तितली – "चंदा मामा, क्या मैं पास आ जाऊं?
तेरे संग-संग रजत गगन में, झिलमिल दीप जलाऊं?"
हँस के बोले चंदा प्यारे – "पहले पंख बढ़ाओ,
सपनों के आसन पर बैठो, नभ में दूर उड़ आओ!"
तितली बोली – "सपनों में ही सही, संग तू आ जाना,
फूलों वाली दुनिया में फिर, मुझसे मिलने आना।"
चंदा बोला – "रोज़ रात को, मैं हीं तो आता हूँ,
तेरे नन्हें पंखों से मैं, उजियारा लाता हूँ!"

सुरेश कुमार गौरव
प्रधानाध्यापक, उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा,
पटना (बिहार)

भारत के वीर सपूत

अभी हम सब नन्हें बच्चे ,
सोच बड़ा कर पाएँगे।
आगे चलकर हम भारत के
सच्चे वीर सपूत कहलाएँगे।
नए नए हम काम करेंगे ,
धवल इतिहास बनाएँगे।
जीवन के हर क्षेत्र में हम सब ,
नया परचम भी फहराएँगे ।
दुश्मन की जब टेढ़ी नजर हो ,
वहीं उसे मार गिराएँगे ।
दुश्मन की करनी का फल भी ,
शीघ्र उसे मिल जाएँगे।
अभी हम सब नन्हें बच्चे ,
सोच बड़ा कर पाएँगे ।
आगे चलकर हम भारत के
सच्चे वीर सपूत कहलाएँगे।
सीमा पर आतंकियों के मंसूबे को ,
कभी एक नहीं चलने देंगे ।
दुश्मन जो हमारे देश का होगा ,
उसके जख्म नहीं भरने देंगे ।
दुश्मन की छोटी गलती को भी
हम नजरंदाज नहीं कर पाएँगे।
देश दुनिया के नवल मंच पर ,
उसका कुकृत्य बतलाएँगे।

अभी हम सब नन्हें बच्चे ,
बड़ा सोच कर पाएँगे।
आगे चलकर हम भारत के
सच्चे वीर सपूत कहलाएँगे।
देश हमारा पहला और अंतिम ,
देश ही हम सबकी शान है ।
देश के खातिर जिएँ मरें ,
यही हम सबका भी अरमान है ।
दुश्मन की जब टेढ़ी नजर हो ,
तब हरदम उसे सताएँगे।
गलत सोच जब उसकी होगी ,
तब उसे कभी छोड़ नहीं पाएँगे।
ईंट का जबाव पत्थर से देंगे ,
नवयुग इतिहास रचाएँगे।
देश के आन , बान और शान को ,
हम सब हरदम आगे बढ़ाएँगे।
अभी हम सब नन्हें बच्चे ,
बड़ा सोच कर पाएँगे।
आगे चलकर हम भारत के
सच्चे वीर सपूत कहलाएँगे।

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

दसों दिशाएँ

जहाँ सूरज रोज निकलता है।
जिधर से नभ में चढ़ता है।।
पूरब उसको कहते प्यारे।
सुबह रोज हीं दिखता प्यारे।।
दिन बीते जब होती शाम।
सूरज करने चला विराम।।
वही दिशा है पश्चिम प्यारे।
रात होने की करे इशारे।।
सुबह सूरज जब देख रहे हो।
हाथ फैलाए अगर खड़े हो।।
दक्षिण दायाँ हाथ बताया।
बायीं ओर उत्तर कहलाया।।
चार दिशाओं के आगे भी।
चार कोण को जानें सभी।।
पूरब- दक्षिण मिले जहाँ।
अग्नि-कोण होता वहाँ।।
पूरब- उत्तर जहाँ मिलते।
ईशान-कोण उसे कहते।।
दक्षिण-पश्चिम जो मिल जाएँ।
नैऋत्य का कोण बनाएँ।।
उत्तर-पश्चिम ज्यों हीं मिलते।
वायव्य-कोण का नाम निकलते।।
मूल दिशाएँ चार हीं होती।
चारो कोणों पर मिलते मोती।।
ऊपर नीचे यदि मिलाएँ।
कुल दस होती हैं दिशाएँ।।
सोच-समझ जो कदम उठाए।
उसकी जय गूँजे दसों दिशाएँ।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज
पटना।

दिशा धुन

प्यारे बच्चों सुन सुन सुन,
दिशा की प्यारी सी इक धुन।
सूरज जिधर से सुबह उगे,
कहते उसको पूरब तुम।
प्यारे बच्चों सुन सुन सुन..
देखो सुबह में सूरज को,
आँखे मीचे सिर ना धुन।
पीछे तुम अब देखो प्यारे,
होती है पश्चिम तुम सुन।
प्यारे बच्चों सुन सुन सुन..
अपना मुँह पूर्व कर लो,
सुबह सूर्य को देखो तुम।
अपने दाईं ओर देखो अब,
दक्षिण यही दिशा है सुन।
प्यारे बच्चों सुन सुन सुन..
उल्टे उसके बाईं ओर,
उत्तर दिशा कहे सब सुन।
चारों दिशा को याद रखो,
दिशा ज्ञान की है यह धुन।
प्यारे बच्चों सुन सुन सुन..

डॉ. स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज
कटिहार

स्व कर्तव्य के दीवानें

नन्हें मुन्ने हमें न समझें ,
बुद्धि के बड़े सयाने हैं ।
स्व कर्त्तव्य पथ पर चलने को
हम सब बड़े दीवाने हैं ।
नित्य क्रिया से निवृत्त हो ,
दंत सफाई रोज हैं करते ।
भोजन से पहले स्नान हैं करते ,
इस नियम को कभी न उलटते ।
दिनचर्या हमारी सधी होती है ,
समय से बंधी होती है ।
समय स्कूल का जैसा भी हो ,
उसी अनुरूप ढली होती है ।
पढ़ना हमे खूब है आता ,
लिखना भी मुझे भाता है ।
बोल बोलकर पढ़ने में ,
सचमुच बड़ा आनंद भी आता है ।
पढ़ने को जो हमें मिलता ,
उसे मन से पढ़ लेते हैं ।
हृदय की गहराई से ,
कंठस्थ तभी कर लेते हैं ।
नन्हें मुन्ने हमें न समझें ,
बुद्धि के बड़े सयाने हैं ।
स्व कर्त्तव्य पथ पर चलने को ,
हम सब बड़े दीवाने हैं ।

प्यार हमे माता पिता से मिलता ,
हम सब उनके ऋणी होते हैं ।
भूलकर भी उन्हें नहीं भुलाते,
वे बीज प्यार के बोते हैं ।
माता , पिता औ गुरु हमारे ,
ये सब हैं तारणहारे ।
यही हमेशा ध्यान हैं रखते ,
यही हमारे अधिक सहारे ।
माँ का आश्रय लेकर ही
बड़े काम भी करते हैं।
पिता के अच्छे सीख वचन से ,
जीवन प्रदीप्त भी रखते हैं ।
कृतज्ञता हमारे रगों में है ,
हम ईश ध्यान भी धरते हैं ।
जिसने धरती , सूरज , चाँद बनाया ,
उस प्रभु का स्मरण भी करते हैं ।
नन्हें मुन्ने हमें न समझें ,
बुद्धि के बड़े सयाने हैं ।
स्व कर्त्तव्य पथ पर चलने को ,
हम सब बड़े दीवाने हैं ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा जिला मुजफ्फरपुर

फलों का राजा आम

फलों का राजा होता आम।
मन को ताजा करता आम।।
मीठे खूब रसीले आम।
हरे, लाल और पीले आम।।
बच्चे, बुढे सभी ललचाए।
बड़े चाव से इसको खाए।।
गर्मी का जब मौसम आए।
बाग-बगीचे हाट महकाए।।
आम के हैं विविध प्रकार।
खाने को हरपल तैयार।।
चटनी, कुचला और अचार।
आमस पेय जैसे उपहार।।
मधुबनी की कृष्णा भोग।
भागलपुरी जर्दालू संयोग।।
मिलता शक्ति घटता रोग।
दूर- दराज इसका उपयोग।।
मुंगेरी चुरम्बा मालदा आम।
समस्तीपुर में बथुआ का नाम।।
पश्चिम चंपारण का जर्दा आम।
सुपौल में गुलाबखास का दाम।।
बंबइया सीतामढ़ी की शान।
कलकतिया दरभंगा की जान।।
चौसा बक्सर की पहचान।
हमको इनपर है अभिमान।।
मधेपुरा, कटिहार का मालदा।
पटना की है दुधिया मालदा।।
फलों से रहता पेड़ लदा।
मिलता है सबको यदा-कदा।।
चलो बाग में घूम कर आएँ।
मीठे आम चुन कर लाएँ।।
मिलजुल कर आपस में खाएँ।
गर्मी पल भर भूल हीं जाएँ।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

भारत माता का मैं लाल

उठता नित सूरज से पहले,
नित उठ करता ज्येष्ठ प्रणाम।
मात पिता दादा दादी संग,
नमन हृदय करू मैं व्यायाम।
हाथ मुंह धोकर प्रात में ,
पढ़ता लिखता नूतन पाठ।
नित विद्यालय समय से जाता ,
पाठ याद कर अपना ध्यान।
अच्छा सच्चा देश का प्रहरी,
जीवनदानी भारत प्राण।
मेहनत करता कभी न डरता,
सिँह गर्जना करें हजार।
भारत के हूं कर्मवीर मैं ,
भारत माँ का मैं विश्वास।
रोज पढ़ूंगा रोज बढ़ूंगा,
यह संकल्प है यह अभियान,

डा स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या '
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज, कटिहार

बच्चों को सीख

सुबह सवेरे तुम उठ जाओ,
पढ़ने में तुम ध्यान लगाओ,
खेलो कूदो मौज करो तुम,
जीवन में तुम खुशियाँ पाओ।
अपने बड़ों का करो सम्मान,
जग में खूब कमाओ नाम,
अनुशासन का पालन करके,
देश का तुम बढ़ाओ मान।
झूठ फरेब से तुम दूर रहो,
नही अभिमान में चूर रहो,
सच्चाई का तुम पाठ पढ़ो,
हर आँखों के तुम नूर रहो।
अच्छी आदतें तुम अपनाओ,
मुश्किल से नही घबड़ाओ,
मेहनत जो करो ईमानदारी से,
तभी जीवन में सफल कहलाओ।
प्यारे बच्चों तुम विनम्र बनो,
छोटी बातों पर नही ठनो,
मृदु व्यवहार से तुम अपने,
सबके ही तुम सदा प्रिय बनो।

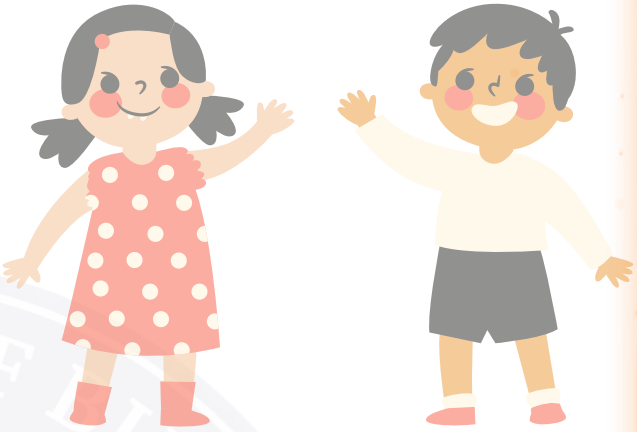

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय तेनुआ गुठनी
सीवान बिहार

गर्मी की रात

भली – भली सी लगती मुझको ,
ये गर्मी की रात ।
छत के ऊपर हल्का – फुल्का
करके रोज़ बिछौना ।
बड़ा मज़ा देता गर्मी भर
खुली हवा में सोना ।।
फिर क्या कहना अगर कहीं हो,
दादी माँ का साथ ।
भली – भली सी लगती मुझको ,
ये गर्मी की रात ।
चंदा के किरणों के रथ पर
शीतलता का आना,
यहाँ – वहाँ हर तरफ चमकती
चाँदी का मुस्काना ।
आसमान के ऊपर निकले,
तारों की बारात ।
भली – भली सी लगती मुझको,
ये गर्मी की रात ।
तेज़ धूप के कारण दिन में,
होना पड़ता कैद ।
बाहर निकलो, लू लगने को,
खड़ी हुई मुस्तैद ।।
बहुत रात तक जुड़े मंडली,
चलती रहती बात ।
भली – भली सी लगती मुझको,
ये गर्मी की रात ।।

आशीष अम्बर
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी
जिला – दरभंगा
बिहार

लोरी: ममता की मीठी छाया

चंदा मामा पास बुलाते, तारे झिलमिल झूला झुलाते,
माँ की गोदी, प्यार की बूँदें, सपनों में रसधार बहाते।
दादी नानी मीठी बोली, कथा-कहानी रोज सुनाती,
पलक झपकते नयनों में वो, नींद भरी मुस्कान जगाती।
पंखुड़ियों से हल्की बाती, बयारों में मधु-मिलन सुनाती,
लोरी बनकर स्मृति में उतरी, बचपन की तस्वीर सजाती।
नव जीवन का बीज यही है, संस्कारों की पहली थाती,
मन को गढ़ती, भाव सिखाती, भीतर सुधा-सुरभि बरसाती।
बाबा दादा छाँव बनाते, गीतों में वे प्राण बसाते,
ममता, त्याग, धैर्य की गाथा, हर पल लोरी में बुन जाते।
जो सीखा उस मीठे सुर में, वो शिक्षा बन साथ निभाती,
कभी विवेक, कभी संवेदना, बनकर जीवन राह दिखाती।
आज भले हों व्यस्त समय से, मोबाइल में खो जाते,
पर लोरी की छाँव न भूलो, जड़ से खुद को जोड़ बनाते।
चलो लिखें फिर एक कहानी, फिर से गाएँ लोरी प्यारी,
बचपन में भर दें उजियारा, मधुर सुरों की राग-दुलारी।

सुरेश कुमार गौरव
प्राचार्य, उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

क्रिकेट में वह छाया सोना

खेल खेलना अच्छा लगता।
खेल नहीं तो जीवन खलता।।
जीवन को हिस्सों में बाँटो।
बचपन के हिस्से न काँटो।।
छोटा बचपन प्यारा बचपन।
जीवन का यह भी है भटकन।।
इसको जीने का अवसर दो।
छोटा ही तो संवत्सर दो।।
मोबाइल देकर मत मारो।
जितना होए उतना टारो।।
टीवी का होता है हौका।
प्रिय लगता है छक्का चौका।।
वैभव का प्यारा है होना।
क्रिकेट में वह छाया सोना।।
कैसा जीवन सफल बनाया।
कुछ मैंचो में दखल बनाया।।
बच्चो!तुम भी मन को मोड़ो।
व्यर्थ समय से नाता तोड़ो।।

रामपाल प्रसाद सिंह
मध्य विद्यालय दर्वेभदौर
पंडारक पटना बिहार

भूषण छंद

जीवन का पहला अक्षर, जिस भाषा का होता स्वर।
चित का तार जुड़े हर-पल, बहती है रसधार प्रखर।।
लोरी जैसी होती यह, आती ममता भाव निखर।
गहते जिससे सोच समझ, भाषाओं का यह रहबर।।
आओ सोचें भी इसपर, शिक्षण होता है संबल।
भाव- अर्थ को जोड़ सरल, हों पाने में समझ सफल।।
दूसरे शब्द सदा सहज, आत्मसात कर सके सरल।
समाधान संशय का यह, करते है विद्वान पहल।।
किसी विषय का ज्ञान सहज, मातृ-भाषा सिखाती नित।
पढ़ते सदा लगाकर मन, होते हैं सब आनंदित।।
रटने वाली बात न कर, समझ सदा होती विकसित।
शिक्षा में गुणवत्ता भर, रखती बच्चों को हर्षित।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज पटना।

राष्ट्रीय आतंक विरोधी दिवस

गजल

आप आतंक से लड़ सकें जो कभी,
रोज डर से निशाना बनेगा नहीं।
कौन आया यहाँ है अमर हो सदा,
मार डालो अगर तो मरेगा नहीं।।
आप कोसो रहे दूर तो क्या हुआ,
सांप है पर किसी को डंसेगा नहीं।
हौंसला रख चलो शस्त्र थामों जरा,
वार खुलकर करो वह बचेगा नहीं।।
मौन रहकर सदा बल उसे है दिए,
रोक दें जो कभी तो उठेगा नहीं।
देर अब हो गयी बात ऐसी कहाँ,
डिग सको जोर उसका चलेगा नहीं।।
काश सबके दिलों में सदा प्यार हो,
नफरतें साथ कोई रखेगा नहीं।
क्रोध पापी बनाया सभी को यहाँ,
प्रेम का भाव लेकिन मिटेगा नहीं।।
रोष करते सदा दोष हरते सदा,
लोभ का मोह मन में रहेगा नहीं।
सिर उठाकर जिए तो जिए हैं सदा,
खून से भूमि अब तो सनेगा नहीं।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज पटना।

शौर्य की शपथ

हिंसा की ज्वाला न जलने देंगे,
भारत माँ को न छलने देंगे।
धरती पर जो शांति उगाई,
उसे न अब हम मुरझाने देंगे॥
वीरों की यह पुण्य विरासत,
रखवाले हैं हम सभ्यता के।
जो आतंक दिखा के डर लाया,
उत्तर देंगे हम एकता से॥
बम-बारूदों से न डरते हैं,
हम फूलों से भी लड़ सकते हैं।
दया, क्षमा, पर दृढ़ संकल्पों से,
चट्टानों सा बढ़ सकते हैं॥
कश्मीर से कन्याकुमारी तक,
हर कोना अब जागा-जागा।
रग-रग में है देशभक्ति जो,
न मचने देंगे आतंक का दंगा॥
शपथ ये लें आज़ादी की हम,
न रक्त बहाना पड़े पुनः फिर।
विचार, विवेक, संवादों से,
नव भारत हो निर्मल-निर्झर॥

सुरेश कुमार गौरव
प्रधानाध्यापक, उ.म.वि.रसलपुर,
फतुहा, पटना बिहार

शिक्षा में मातृभाषा की उपयोगिता

सही शिक्षा सफल तभी होती ,
जिसमें मातृभाषा का उपयोग निश्चित हो ।
मातृभाषा ही समझ दृढ़तर करती ,
जिसमें विषय संदर्भित प्रयोग सुनिश्चित हो ।
सीखने सिखाने की प्रक्रिया में ,
मातृभाषा का अधिक महत्त्व है ।
जीवन के अनछुए प्रसंग में भी ,
इस भाषा का अधिक समत्व है ।
निशा घेरती जब उजाले मन में ,
तब समझाने का कार्य इसी भाषा का ।
संस्कारों में यह इस कदर छाई है ,
संवर्धित करती मूल्य परिभाषा का ।
शिक्षा में भाषा अपनाना वही होता ,
जिस भाषा को हम जानें ।
प्रत्येक शब्द के अर्थ की समझ हो ,
तभी उस परिभाषा को हम मानें ।
मातृभाषा में अध्ययन अध्यापन का,
है आज खूब शोर सुनाई देता ।
इसके अधिक सटीक फायदे हैं ,
कई कमियों को यह हर लेता ।
शिक्षा का उच्च स्तर बढ़ता तब ,
जब माध्यम मातृभाषा हो अध्यापन का ।
क ही भाषा के जब गुरु शिष्य मिले हों ,
तब वह शिक्षा लगती अपनापन का ।
शिक्षा में उपयोग का सुअवसर यह ,
मातृभाषा को शिखर पर लाने की ।
केवल दिल ही नहीं दिमागों में भी ,
इस बात को सर्वदा अपनाने की ।
यह संस्कारों की थाती बनकर ,
यह भेद , विभेद बतलाता है ।
मातृभाषा के गुण के कारण ही ,
यह हमें गुह्यतम ज्ञान कराता है ।
भाव प्रवणता समुच्चय बोध में ,
यह दिग्दर्शन खूब कराती है ।
आत्मा के सौंदर्य प्रबोध में ,
यह नवल इतिहास रचाती है ।
शिक्षा में मातृभाषा के उपयोग को ,
अधिकाधिक जीवन में हम लायें।
नए नए विषयों में रमकर नित्य ,
इसका खूब मूल्य बढ़ा पायें ।
सृष्टि के कण कण को समझने में ,
मातृभाषा ही अधिक फलदायक है।
यह भाषा अति तृप्त करती मन को ,
यह भाषा सहज सरल सुखदायक है ।
शिक्षा से जोड़ती सीधे संस्कारों को ,
यह प्रेम भाव बरसाती है ।
मातृभाषा होती इतनी प्यारी,
यह मन को शब्दों से नहलाती है ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक
विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

विश्व कछुआ दिवस

भूषण छंद

आज हुआ कछुआ दुर्लभ, रहता है जल के भीतर।
कर सकता भी है थल पर, जीवन अपना गुजर-बसर।।
लम्बा जीवन जीता यह, इसको ले मान उभयचर।
तन रक्षित कर रहा कवच, रहता इसके जीवन भर।।

वर्ग सरीसृप प्राणी सह, संघ रज्जुकी का यह चर।
विष्णु अवतार लिए ग्रहण, कूर्म रूप में भूतल पर।।
सागर मंथन किए सरल, पीठ मंदार पर्वत धर।
साल तीन सौ जीवित रह, चाल चले यह अति मंथर।।

पर्यावरण जाता बदल, हुआ प्रतिकूल है गोचर।
है शिकार का काम प्रबल, किया इसे जीना जर्जर।।
जागरूक बनकर हम-सब, जीवनदान करें मिलकर।
प्रकृति संतुलित हो हितकर, सबका जीवन भी शुभकर।।

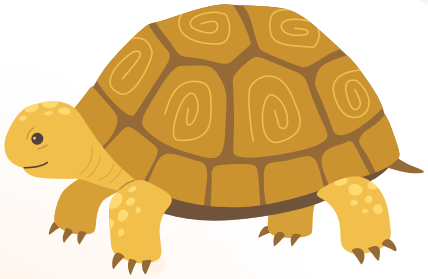

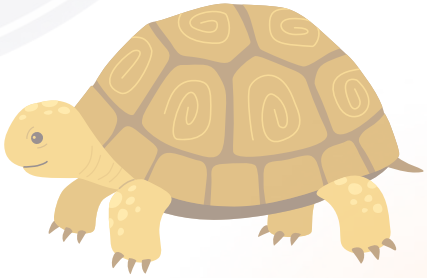

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज पटना

कछुए की चाल

धीरे-धीरे चलता कछुआ,
धैर्य-ध्वनि-सा बलता कछुआ।
शांत, सहज, संकल्पी लगता,
मौन मगर हर पलता कछुआ।।
जल-थल दोनों जीवन उसका,
गति में गूढ़ विवेक है जिसका।
छोटा तन, पर ध्यान विशाल,
सद्गुणों का एक रस उसका।।
तन पर कवच, मन में ममता,
धीर बने जब लहरें हँसता।
संकट हो या भीषण आंधी,
कभी न पीछे हटकर बसता।।
सृष्टि-प्रेम का प्रतिरूप यह,
कूर्म रूप का अमूल्य छंद।
संरक्षण का संदेश यह दे,
जीवन-गति में भले हो मंद।।
चलो बचाएँ इसे धरा से,
शैल-सरोवर सबकी काया।
कछुए जैसा बने धरा पर,
संयम, त्याग, तपस्या माया।।

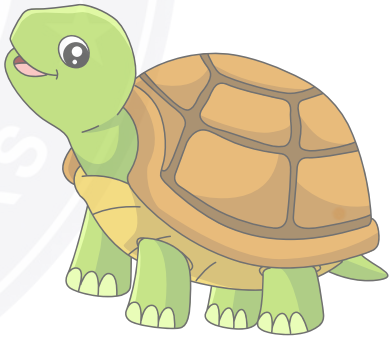

सुरेश कुमार गौरव
प्रधानाध्यापक, उ.म.वि.रसलपुर,
फतुहा, पटना (बिहार)

जहाँ चाह वहाँ राह हमारी

जिंदगी जीने की करें तैयारी ,
जहाँ चाह वहाँ राह हमारी ।
पर मनमानी करें यदि हम ,
तो छीन जाएँगी खुशियाँ सारी ।
मन से ही खुशियाँ हैं मिलतीं ,
मन की सब कलियाँ हैं खिलतीं ।
मन के जीते जीत है होती ,
यह सब खुशियों से बड़ी है दिखतीं ।
ध्यान हमारा यदि एक डगर हो ,
लक्ष्य पाने में न कभी कसर हो ।
खुशियाँ मिलेंगी जो हम चाहें ,
यदि कुछ भी न कभी अगर मगर हो ।
इधर उधर कभी मन में न लाएँ ,
मन सीधे लक्ष्य को ध्याए ।
तभी सफलता मिलती सबको ,
जहाँ चाहें वही राह बनाएँ ।
क्या थे पहले कभी न शरम हो ,
क्या हम हैं इसका न भरम हो ।
कभी न किसी के बिगड़े करम हों ,
बोल किसी के कभी न गरम हों ।
खुशियों संग जब दीप जले हों ,
मन की आभा कभी न कम हो ।
दिन पर दिन यह बढ़ता जाए ,
फिर हमें नहीं किसी बात का गम हो।
जीवन बिना लक्ष्य के नहीं चलता ,
बिना इसके दोष नहीं टलता ।
सोचे बिना कुछ करें न कभी हम ,
इससे नित सौभाग्य है बनता ।
जीवन की डगर आसान बनाएँ ,
लें एक समझ तभी दूसरा आजमाएँ।
कभी न करें इधर उधर की बातें ,
केवल लक्ष्य सदा सुंदर अपनाएँ

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक
विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

सुनो बेटियों

शस्त्र ले हाथ में अब अड़ो बेटियों।
युद्ध तुम कालिका- सी लड़ो बेटियों।।
आज तक लोग अबला समझते रहे।
बोध तुम शौर्य का अब भरो बेटियों।।
चांद कहते रहे तेज हरते रहे।
सौम्यता गान पाना तजो बेटियों।।
क्रूरता से डरो यह उचित है नहीं।
क्रूरता चूर करने बढ़ो बेटियों।।
नैन कोई दिखाए तुझे जो अगर।
आँख उसका निकाले कहो बेटियों।।
सब्र करना सतत धर्म मानी सदा।
कब्रगाहें बनाने चलो बेटियों।।
प्यार पाना सदा हक रहे हर जगह।
प्यार में मिट सको तो बचो बेटियों।।
चण्डिका रूप तेरा सभी जानते।
रौद्र भाए कभी रूप को बेटियों।।
हार मानो नहीं तुम जहाँ से कभी।
जीत का जश्न खुद से गढ़ो बेटियों।।
और उम्मीद को छोड़ दो तुम यहाँ।
सर्व सामर्थ्य में तुम रहो बेटियों।।
मंजिलें हैं कदम की निशानी बनी।
पग खुशी से बढ़ाते चलो बेटियों।।
रात कितनी भयावह रहें हों मगर।
भोर होना प्रकृति है, सुनो बेटियों।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज पटना

लक्ष्य की प्राप्ति

लक्ष्य तेरे बहुत बड़े हों,
यह नहीं कोई जरूरी।
हर बात में कोई साथ दे,
यह नहीं उसकी मजबूरी।
लक्ष्य जितना ही बड़ा हो,
पुरुषार्थ भी उतना घना हो।
कभी आराम में पग मतधरो,
इसमें यही करना मना हो।
किसी पाश में बंधना नहीं,
पर शौर्य दिखलाते चलोगे।
आलस्य को तुम छोड़कर,
स्व कर्त्तव्य पथ बढ़ते चलोगे।
अपने लक्ष्य के हर आईने में,
तुम कभी धूमिल न पड़ना।
हो सके तो इस आईने को,
साफ सदा करते भी रहना।
कभी छोटे बात पर भी,
ईर्ष्या कभी मन में न लाना।
लक्ष्य जब हकीकत बने तो,
नित परोपकार की गंगा बहाना।
अपने लक्ष्य प्राप्ति में सदा,
यह ध्यान रखना पड़ेगा।
भरोसा और विश्वास को सदा,
जगह निश्चित देना पड़ेगा।
लक्ष्य के लिए जीवन समर्पित,
लक्ष्य ही तुम्हारी आसमां हो।
पुरुषार्थ के बढ़ते चरण की,
यही सच्ची तुम्हारी दास्तां हो।
अपने लक्ष्य प्राप्ति के डगर में,
गागर में यदि सागर भरे हो।
कम शब्दों में बड़ी बात भी,
कह सकते तो तुम बड़े हो।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक
विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

ज्ञान दीप जलता जहाँ

दोहावली

विद्यालय के छात्र को, नित्य दीजिए ज्ञान।
पावन शुचिता ज्ञान ही, जीवन का उत्थान।।०१।।
विद्यालय के पास से, करें गंदगी दूर।
बच्चों के अंतस सदा, भरें ज्ञान भरपूर।।०२।।
विद्यालय परिसर निकट, हो फूलों का बाग।
मन के सुंदर भाव को, करिए कभी न त्याग।।०३।।
बच्चे माटी की तरह, इन्हें तराशें नित्य।
ज्ञान ज्योति दमके सदा, जैसे नव आदित्य।।०४।।
बच्चे कोमल भाव के, बनें नेह संबंध।
गुरुजन के आशीष से, फैले ज्ञान-सुगंध।।०५।।
समझ परखकर छात्र में, भरिए अभिनव ज्ञान।
सुंदर चिंतन सोच पर, टिकी देश की शान।।०६।।
कोरे कागज की तरह, बच्चों को लें जान।
सौम्य लेखनी से सदा, रहें बढ़ाते मान।।०७।।
ज्ञान दीप जलता जहाँ, होता वहाँ प्रकाश।
पावन ज्ञानालोक से, करिए तम का नाश।।०८।।
विद्या के अवलंब से, करिए मन उजियार।
यह धन सर्व-प्रधान है, देता है सुखसार।।०९।।

देवकांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय धवलपुरा,
सुलतानगंज, भागलपुर, बिहार

हम नन्हें-मुन्हें बालक हैं

हम नन्हें-मुन्हें है बालक,
दिल के बहुत हीं भोले।
कोई पूछता जब हमसे,
हैं बन जाते बड़बोले।।
जागने से सोने तक,
निश्चित क्रम है होता।
पढ़ने के विषय जितने,
क्रम इसमें कभी न खोता ।।
नित्य स्कूल जाने का,
क्रम नहीं अब छूटता।
क्रम जो नित बन जाता,
मन सारा दिन वही ढूँढता ।।
कक्षा में शिक्षक की बातें,
धैर्यपूर्वक हम सुनते हैं।
श्रद्धा से उसे मन में ले ,
नित कई बार गुनते हैं ।।
घंटी खेल की जब-जब होती,
हम साथ-साथ खड़े होते।
हार जीत है लगा हीं रहता,
पर बुद्धि-विवेक कभी न खोते।।
गुरुओं के प्रति श्रद्धा भाव,
बसता दिल के हर कोने में।
उनके आशीर्वाद के कारण हीं,
मन रमा रहता है पढ़ने में।।

अमरनाथ त्रिवेदी
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

वट-सावित्री

दोहा छंद

खास अमावस ज्येष्ठ को, मिलता ऐसा योग।
पति की रक्षा कर सके, नारी निज उद्योग।।०१।।

सती शक्ति भूषण सदा, नारी का सम्मान।
जिसके आगे हैं झुकें, कृपा-सिंधु भगवान।।०२।।

वट- सावित्री का जहाँ, पूजन शुद्ध विधान।
सहज भाव करते वहाँ, शंकर कृपा प्रदान।।०३।।

सत्यवान के प्राण को, लेकर यम प्रस्थान।
सावित्री पीछे गयी, जहाँ मिली वरदान।।०४।।

जीवन पति का मिला, वरद हुआ संतान।
जगत ख्याति उसको मिली, सती शक्ति पहचान।।०५।।

कर्म वचन मन से सदा, रखती पति का ध्यान।
सती शक्ति उसको मिला, जो दे पति पर जान।।०६।।

बरगद द्योतक आयु का, दिखता भी बलवान।
गुणकारी है मानकर, पूज रहा इंसान।।०७।।

दौर आधुनिक आज है, समझे कुछ नादान।
पूजन संस्कृति में सदा, छुपा हुआ विज्ञान।।०८।।

नारी ममता खान है, यम से भी बलवान।
सती शक्ति जिसने गहा, झुका दिया आसमान।।०९।।

सावित्री सीता कहें, अनसूया पहचान।
जिनके सतीत्व का किए, वंदन है भगवान।।१०।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज
पटना।

आँचल मैं भर लूँ

मैं सावित्री बन ईश्वर से ,
पिय प्राण वरण कर लूँ।
मैं काल के नियमों को भी,
प्रण से ,आज शमन कर लूँ।
मैं अपने साहस तपबल से ,
विधि काल चक्र बदलूँ।
इस अगणित वैभव को भी ,
मैं तो , पल प्रतिपल तज दूँ।
पिय का संग अहर्निश पाऊँ,
वट पूजन कर लूँ।
सुना है कि यमराज भी हारे,
मैं तप वो कर लूँ।
सदा सुहागन बनी रहूँ मैं,
मन सुन्दर कर लूँ।
घर आँगन बस प्रेम हमेशा,
आँचल मैं भर लूँ।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज,कटिहार

संस्कारों का संगम

संयुक्त कुल की छाया में,
बचपन बुनता स्वप्न सुनहरे।
दादी की गाथा, दादा की सीख,
संस्कार बिखरें प्रेम मनहरे।
चाचा की डाँट, चाची का स्नेह,
सब मिलकर ढाल बनाते हैं।
नन्हे मन को, अनुभव देकर,
जीवन के सब रंग सिखाते हैं।।
जहाँ एकलता में चुप्पी घुले,
वहाँ बातें कम, काम ज़्यादा।
माँ-बाबा भी जब व्यस्त रहें,
तो बचपन पूछे -"कहाँ है दादा?"।।
संघर्षों से जो सीख मिले,
वो संयुक्तता में पलती है।
त्याग, धैर्य और मेलजोल,
बचपन को सच में ढ़ालती है।।
पर आधुनिकता का यह भी कहें,
एकल जीवन में समय सीमित।।
स्वतंत्रता और निजता संग,
विकसित होती क्षमता असीमित।।
न दोष वहाँ, न पूर्ण गुण यहाँ,
निर्भर है वातावरण पर सब।
जहाँ हो संवाद, जहाँ हो स्नेह,
वहीं फलते हैं जीवन तब।।
संयुक्त हो या एकल रूप,
हो परिवार में प्रेम की धारा।
संस्कार, संवाद, अनुशासन ही,
बच्चों का है सच्चा सहारा।

सुरेश कुमार गौरव
उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

माँ की सीख

स्रग्विणी छंद आधारित

रोज माँ टोकती है सुधारो इसे।
दोष तूने किया है निहारो इसे।।
भूल कोई उसे है सुहाता नहीं।
रोज मैं भी उसे हूँ बताता नहीं।।
चाहिए जो हमें माँग लेता सदा।
बात माँ जो कहे मान लेता सदा।।
मुश्किलें भी कभी है बढ़ाती यही।
छोड़ दो भी बुराई बताती यही।।
बोलती है बड़े हो करोगे इसे।
शिष्ट आचार तेरा दिखेगा किसे।।
प्रश्न सारे करेंगे सवाली सदा।
दोष मेरा लगे रोज खाली सदा।।
रोकना भी हमारा बना धर्म है।
टोकना तो हमारा यहाँ कर्म है।।
आज से हीं सुधारें यही मर्म है।
हो गये जो बड़े तो तुझे शर्म है।।
रोकती टोकती प्यार से बोलती।
साँस में है सदा प्रीत को घोलती।
हौसलों को हमारे बढ़ाती सदा।
जीतना सीख जाएँ बताती सदा।।
कान खींचा करे दोष मीचा करे।
नेह से अंक में रोज सींचा करे।।
कौन तेरे सिवा है सहारा कहो।
नेह आशीष दे जीतते हीं रहो।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज
पटना

हे कौवे

कौवे की थी पढ़ी कहानी,
समझी न थी कितना पानी।
कंकड़ कैसे पानी लाये,
कौवे ने कैसे पी ली पानी।
उम्र बीत रही देखा कौआ,
घर- घर में बैठा था कौआ।
बिन पानी ऐठा था कौआ,
कोशिश कर जीता था कौआ।
पग- पग देखा यही कहानी,
समझी जीवन में क्या पानी।
कोशिश विजयी रही निशानी,
कौवे की हुई जय- जय जानी।
हे कौवे क्यों हार न माने,
तेरी तो अब तू ही जाने।
मैं भी समझ लगी बनाने,
लगता है जीवन रस पाने।
कोशिश की तो यही कहानी,
कौवे की है सुनी जुबानी।
कौवा जीवन मे बस जानी,
सुन्दर सफल हुई जिंदगानी।

स्नेहलता द्विवेदी 'आर्या'
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज, कटिहार

बचपन में जो नहीं पिटाया

बचपन में जो नहीं पिटाया, उसका है इतिहास नहीं।
निज घर में पिंजरबद्ध हुआ,उसका है इतिहास कहीं।।
बचपन के पनघट पर जाकर,घोंघे मोती पातें हैं।
डोर पकड़कर समय नदी में,गोंते खूब लगाते हैं।।
जब भी हो एकांत जिंदगी,चलते बाग-बगीचे में।
हरियाली को देखा करते,जाकर फूल-गलीचे में।।
तोता मैना चातक कोयल,सबकी थी पहचान मुझे।
भिन्न बोलियाँ बोलीं जब-जब,दिखे वहीं रसखान मुझे।।
मन को जितना दौड़ाते थे,उतना दौड़ा जाता था।
बदन दौड़ना चाहे भी तो,विवस स्वयं को पाता था।।
निश्चय जिसका करता मन-मन,चोरी उसकी कर लेता।
आसमान के चंदा को भी,अंदर नीर पकड़ लेता।।
आज डरा हूँ जिस गंदा से, तब तो थी पहचान नहीं।
कीचड़ वाले जल-तन ऊपर,देती छोड़ निशान कहीं।।
जिस खोडर में तोते होते,उधर पाँव बढ़ जाते थे।
संग लिए जब घर को लाते,हृदय स्नेह मढ़ जाते थे।।
कभी टिकोले के अंदर से, मुख मंडल मुस्काता था।
कागज की नौका को गढ़ना,अंतस को नहलाता था।।
कभी नदी के तट पर चलकर,धारा में नहलाते थे।
मिल जाए जब बंधु संग में,मस्ती में खो जाते थे।।
कागज की नौका की कीमत,अब तो कौन लगाते हैं।
पास रहा मोबाइल अब तो,दिल में चित्र सजाते हैं।।
रेखा से कब बने किनारे,सोंच दुखी हो जाते हैं।
जब खाई बढ़ रही निरंतर,प्रलय काल बतलाते हैं।।

रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'
प्रभारी प्रधानाध्यापक
मध्य विद्यालय दर्वेभदौर
पंडारक पटना बिहार

संख्या का ज्ञान करें प्रदान

गीतिका

बच्चे कोरे कागज जैसे।
संख्या ज्ञान कराएँ कैसे।।
अंक शून्य से नौ तक रहता।
संख्याओं का मेला लगता।।
बच्चे इनको समझ न पाते।
जबतक अमूर्त भाव बताते।।
बच्चे जिन शब्दों को जानें।
अपनी भाषा से पहचानें।।
वैसी वस्तु पड़े दिखलाना।
गिनती करना उसे बताना।।
कंकड़ पत्थर जो भी मिलता।
आस-पास का प्यारा रहता।।
जहाँ न हो तो बच्चों से हीं।
देते गणना की समझ सही।।
सभी हटाकर रिक्त बनाएँ।
शून्य अंक की समझ बनाएँ।।
अंकों के चिह्न प्रतीकों से ।
कोई उत्कृष्ट सलीकों से।।
हम उनको आभास दिलायें।
फिर अमूर्त का बोध करायें।।
बढ़ना-घटना जब समझाएँ।
गिनती आगे- पीछे पाएँ।।
अंकों से संख्या बनवाएँ।
तुलना जीवन से सिखलाएँ।।
कुछ दिन का अभ्यास कराना।
फिर दो अंकों को बतलाना।।
अन्य क्रिया भी कर दिखलाना।
धैर्य नहीं है जरा गँवाना।।
भूल लाजिमी करते बच्चे।
क्योंकि समझ उनके हैं कच्चे।।
हमको तो सूझ दिखाना है।
संख्या का ज्ञान कराना है।।
बार-बार द्रव्यों को लाना।
काम हमारा है बतलाना।।
सहज सीख जब उनको होगा।
काम आसान सबका होगा।।
उनसे रुचिकर कार्य कराएँ।
खेल – खेल में हम समझाएँ।।
कठिनाई का भाव मिटाएँ।
संख्या की अब समझ बनाएँ।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज पटना।

बच्चों में संख्या ज्ञान

गीतिका

धरती में जो बीज पड़ा है।
पावस पाकर भीज खड़ा है।।
कर्ता बन उसको सहलाए।
तभी हरापन बाहर आए।।
समझें कोरा मत बालक को।
समझें ज्ञानवान चालक को।।
भविष्य इनकी करें प्रतीक्षा।
मिले इन्हीं को अच्छी शिक्षा।।
पहले संख्या ज्ञान बताएँ।
फिर जिज्ञासा समरस लाएँ।।
बाग-बगीचे खूब घुमाएँ।
एक पेड़ को एक बताएँ।।
दूजे दिन फिर वापस जाएँ।
दो पेड़ों को दो समझाएँ।।
सीख लिए जब दस की गिनती।
मंगलमय करना जी बिनती।।
जब भी चाहे खेले खाए।
बोले कभी कभी तुतलाए।।
बिखरे जो भी चीज उठा ले।
उससे ज्ञानी पाठ पढ़ा ले।।
एक-एक से जोड़ सिखाएँ।
घटा-घटाकर शून्य दिखाएँ।।
लंबी जोड़े समय बचाए।
ऐसी रीति गुना कहाए।।
समय घटाव बचाए जब से।
भाग नाम तो पाए तब से।।
अच्छे राही राह बताते।
चलकर बच्चे खुद ही पाते।।
एक-नवम को बोल इकाई।
शून्य एक पर डाल दहाई।।
शून्य लगाकर सौ को पाओ।
तीन शून्य से हजार लाओ।।
इतनी संख्या मन जो डाले।
फिर जो चाहे मन में पाले।।
मुट्ठी में फिर दुनिया कर ले।
हरियाली मानस में भर ले।।

रामपाल प्रसाद सिंह अनजान
प्रभारी प्रधानाध्यापक
मध्य विद्यालय दरवेभदौर
पंडारक पटना बिहार

गिनती

गिनती किसको आती है?
भूल गुड़िया क्यों जाती है?
आओ गिनती गिनना सीखें,
मन को क्यों भरमाती है?
रोहित आजा पास हमारे,
खड़े तू रहना अभी किनारे।
रोहित खड़ा अकेला बच्चा,
गिनती हो गई एक।
एक एक एक!
अब आ जाओ मोनू प्यारे,
खड़े हो जाओ उसी किनारे।
बोलो कितने बच्चे दिखते,
रोहित मोनू मिलकर दो।
दो दो दो!
श्याम दुलारे आ जा प्यारे,
खड़े हो जाओ उसी किनारे।
गिनके तो बतलाना कितने,
बच्चे खड़े हुए किनारे ।
तीन तीन तीन!
अच्छा किसको कहो बुलाऊँ,
शाकिब को अब यहाँ मैं लाऊँ।
ये सब मिलकर कितने हो गए,
गिनकर देखो कितने हैं ये।
चार चार चार!
अच्छा..!
एक बार फिर से गिन लेना,
रोहित शाकिब मोनू श्याम ।
चार चार चार!
शाबाश!
कौन आएगा बोलो प्यारे,
सुरजीत आज पास हमारे।
पंक्ति में जा लग जाना तुम,
गिनकर जरा बता देना तुम।
पांच पांच पांच!
अच्छा पांच बच्चे..
बिलकुल ठीक..
अच्छा बताओ सूरज कितना,
एक एक एक!
आँखे कितनी हुईं तुम्हारी।
दो दो दो!
तिपहिए मे कितने पहिये,
तीन तीन तीन!
गाय के कितने पैर हैं प्यारे ।
चार चार चार !
एक हाथ मे अंगुली कितनी ,
पाँच पाँच पाँच!
बहुत बढ़िया..
राम आगे बढ़कर आना,
अब गिनती करके समझाना।
अब कितने बच्चे हैं आगे ,
छह छह छह..!
आगे फिर से अमर को लाओ,
साथ खड़े हो सब समझाओ।
गिनती करके मुझे बताओ,
कितने हो गए तुम बतलाओ।
सात सात सात!
अच्छा...
तो अब साथ कबीर को लाओ ,
खड़े हो जाओ गिन बतलाओ ।
कितने खड़े हो हमें बताओ,
आठ आठ आठ!
जरा यहाँ शबनम भी आओ ,
आकर बगल खड़ी हो जाओ ।
गिनती गिन सबको बतलाओ ,
कितने तुमसब यहाँ सुनाओ ।
नौ नौ नौ !
बहुत सुंदर....
अब रेखा को पास बुलाओ,
रेखा खड़ी शबनम संग जाओ।
रेखा गिनो तो कितने हैं सब,
खड़े हैं जो ये पास तुम्हारे ।
दस दस दस!
अच्छा...
दस कि गिनती फिर दुहराओ।

डॉ स्नेहलता द्विवेदी आर्या
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय
शरीफगंज, कटिहार

बच्चों में संख्या ज्ञान कराएँ

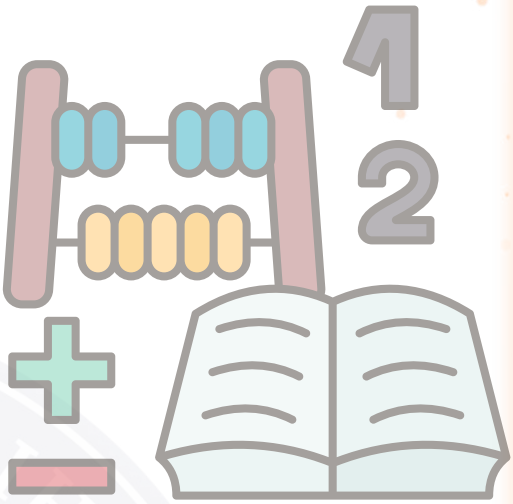

सीखने सिखाने के क्रम में ,
बच्चों में संख्या ज्ञान जरूरी है ।
इसके सिवा अन्य ज्ञान भी ,
इस ज्ञान के बिना अधूरी है ।
हम अंक ज्ञान से शुरू करें ,
फिर संख्याओं को दर्शाएँ।
पुनः संख्या में जोड़ घटाव से ,
बच्चों में संख्या ज्ञान बढ़ाएँ।
बच्चों में संख्या ज्ञान कराने को ,
दस छोटे फल भी ले सकते हैं ।
इसके जरिए प्रथम अंकीय ज्ञान ,
फिर संख्या ज्ञान करा सकते हैं ।
प्रायोगिक ज्ञान कराने से ,
समझ जल्द विकसित होती है ।
संख्या ज्ञान में बच्चे निपुण होते ,
औ उनकी दिशा कभी न खोती है ।
संख्या ज्ञान के इसी क्रम में ,
ऐसे ही हम उन्हें जोड़ चलें ।
बच्चों में इस अज्ञानता को ,
उनके जीवन से मोड़ चलें ।
घटाव की प्रक्रिया से भी ,
बच्चों में संख्या ज्ञान कराएँ ।
दोनों में जब तालमेल हो
तो इसे हरदम ही अपनाएँ ।
एक एक कर विलग करने से ,
संख्या का मान घटता जाता ।
फिर इसमें यदि जोड़ा जाए तो ,
संख्या का मान बढ़ता जाता ।
शुरू शुरू में कुछ मेहनत इसमें ,
फिर यह अपना सदा बन जाता है ।
भूले न भुलाए यह संख्या ज्ञान ,
अपनी अनंत शक्ति दिखाता है ।

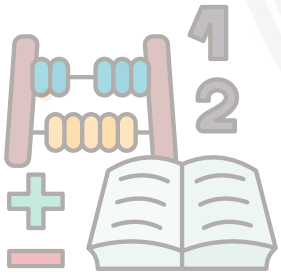

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक
विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

लगन सदा मन राम लगाओ

चौपाई

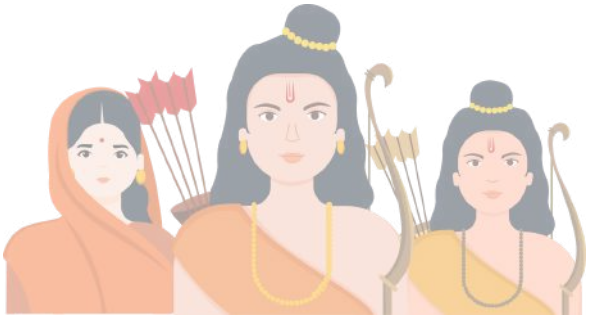

जब-जब भाव कथा मन आवै।
तब- तब प्रेम राम मन भावै।।
प्रभुवर के गुण जो मन गाता।
सब सुख-शांति सदा वह पाता।।०१
चरणन राम पखारत जोई।
उनकर काम सदा हित होई।।
प्रभु पद पंकज है सुखकारी।
परम पुनीत सदा शुभकारी।।०२
रघुपति राघव नाम पुकारो।
अभिनव पावन भाव उतारो।।
दशरथनंदन है अति प्यारा।
रघुकुल का वह राज दुलारा।।०३
जब-जब दिव्य रूप प्रभु आते।
तब-तब पुण्य भाव हित लाते।।
सुन प्रभु भक्त-गुहार लगाते।
प्रभुवर राघव प्राण बचाते।।०४
सुन प्रभु राम कथा हितकारी।
सुख यह सार सदा भवतारी।।
सदन सदा नित राम बनाओ।
यश सुख मान सदा तुम पाओ।।०५
मनन करो नित राम बुलाओ।
सरस मनोहर नाम जगाओ।।
रघुकुल की है रीति निराली।
जप तप मंत्र करे रखवाली।।०६
लगन सदा मन राम लगाओ।
भजन कथा कर रोग भगाओ।।
मरण दशानन लोक सुहाए।
विजय सदा प्रभु धर्म बताए।।०७

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
मध्य विद्यालय धवलपुरा,
सुलतानगंज भागलपुर, बिहार

पिता

पिता केवल पिता ही नहीं होते,
वे ढहते विश्वास की ढाल होते हैं,
टपकती छत का इंतज़ाम होते हैं,
हमारे स्वप्निल स्वप्न का लौकिक संसार होते हैं,
हमारे निवाले की रोटी-दाल
हमारी देह का वस्त्र,
हमारी मां के सर्वस्व
और हम सबके नींद-चैन होते हैं।
वे धूप में ठंडी छाँव हैं,
वे सर्द रातों में गरम आग हैं,
वे वक़्त की आँधी में अडिग दीवार हैं।
वे अल्पभाषी हैं जरूर
पर उनकी हर ख़ामोशी में ममता की गूँज है।
बिना कहे सबको समझने वाले
देवस्वरूप हैं।
पिता—
जिनके माथे की हर शिकन में
छिपे हैं सालों के संघर्ष।
किंतु
वे हमारे हाथों की लकीरों के नसीब हैं,
हमारी पहली पाठशाला,
हमारा पहला विश्वास हैं।
सचमुच !
पिता केवल एक शब्द नहीं,
एक संपूर्ण जीवन-वृत्त हैं—
त्याग, सुरक्षा, सहारा और संबल
उनकी अद्भुत कृति के अनेकानेक रूप हैं।
उनकी अद्भुत शक्ति के
न दूजे रूप हैं।

अवनीश कुमार
बिहार शिक्षा सेवा (शोध व अध्यापन उपसंवर्ग)
व्याख्याता
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय विष्णुपुर,बेगूसराय

हिंदी की पत्रकारिता

हिन्दी की पत्रकारिता, सत्य हेतु तैयार,
हर परिवर्तन की छवि, देती सच्चा सार।
जनमन की अभिव्यक्ति का, बनती है आधार,
नीति, धर्म, संवाद में, करती नव उपकार।
‘उदन्त मार्तण्ड’ बना, पहला पत्र प्रकाश,
शब्दों से इतिहास का, रच डाला उल्लास।
आजादी के वक्त जब, छाया अंधकार,
कलम बनी मशाल तब, जागा जन विचार।
गांधी की आवाज़ को, जिसने दिया विस्तार,
नेहरू, सुभाष, भगत के, भावों का सत्कार।
नवयुग की पत्रकारिता, करे सदा प्रयास,
सूचना संग मूल्य का, फैलाए विकास।
न हो पक्षपात कभी, न हो झूठी बात,
हिन्दी की पत्रकारिता, दे जन को सौगात।
जन-जागरण का बने, जब निष्कलंक आधार,
तब ही युग की लेखनी, कहलाए प्रतिकार।
भाषा का सम्मान हो, लेखनी में हो धार,
धर्म, जाति से परे हो, सच की सीधी हो वार।
कलम चले उस ओर जो, हो जनता जज़्बात,
पत्रकारिता तब बने, युग की सही बात।
“हिन्दी की यह लेखनी, युग की अमिट मिसाल,
सत्य-सरोवर में सदा, करे विचार-सवाल।”

सुरेश कुमार गौरव
प्रधानाध्यापक, उ.म.वि.रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

मैं पत्रकार हूँ

मैं पत्रकार हूँ,
मैं जनतंत्र की आवाज,
लोकतंत्र का साज हूँ।
मैं पत्रकार हूँ।
कलम हमारी ताकत है,
कलम हमारी जान है।
कलम से हीं विश्व भर में
बनी मेरी पहचान है।
मैं आम जनता को दिलाता,
उनका अधिकार हूँ।
मैं पत्रकार हूँ।
देश के हर कोने में जाता ।
विभिन्न प्रकार की खबरें लाता ।
कभी हँसाता,कभी रूलाता ।
कभी किसी खबरों में मैं ,
मचा देता हाहाकार हूँ ।
मैं पत्रकार हूँ।
कभी गिरता ,कभी उठता ।
दिन भर कड़ी मैं मेहनत करता ।
लोगों की धमकी को सुनता।
पर न मैं किसी से डरता ।
कभी भीड़ के फूटे गुस्से का
बन जाता मैं शिकार हूँ।
मैं पत्रकार हूँ।
बातें सबकी गौर से सुनता।
आलोचना से नहीं घबराता ।
सत्य की राह में जान भी जाए।
कलम मेरी पर रूक न पाए।
आलोचकों की आलोचना को,
मैं करता दरकिनार हूँ ।
मैं पत्रकार हूँ।
मैं चलता -फिरता समाचार हूँ।
मुझे गर्व है कि मैं पत्रकार हूँ।

मनु कुमारी
मध्य विद्यालय सुरीगाँव,बायसी
पूर्णियाँ ,बिहार

भूषण छंद गीत

उठा लेखनी लिखते हम, सदा सत्य को करें प्रबल।
सभी यहाँ खुश होते कब, लगे कभी मुश्किल सा पल।।
झूठ परोसें कहीं अगर, घृणित लेखनी होती तब।
कैसा भी हो काम मगर, अच्छा सुनना चाहें सब।।
हमें दिखाना सबको पथ, लिखना केवल नहीं गजल।
सभी यहाँ खुश होते कब, लगे कभी मुश्किल सा पल।।०१।।
रखते संशय कैसे हम, कहे लेखनी रहो सजग।
त्यागो चिंता तुम हरदम, तेरी हो पहचान अलग।।
कर्म निरंतर करना तुम, होना तुमको सदा सफल।
सभी यहाँ खुश होते कब, लगे कभी मुश्किल सा पल।।०२।।
रूठे कोई करें न गम, अपनी धुन में जाते रम।
यों तो वाणी मधुर सहज, अक्सर बोला करते हम।।
फिर भी रचना भेद हृदय, कह जाता है भाव सबल।
सभी यहाँ खुश होते कब, लगे कभी मुश्किल सा पल।।०३।।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज पटना।

आतंकवाद मिटाना है

केवल खाली खाली बातों से ,
अब पेट नहीं हमे भरना है ,
जबतक आतंकवाद खत्म नहीं होता ,
उससे हरपल ही हमें लड़ना है ।
आतंकवाद की जड़ें इतनी गहरी ,
जो अबतक उखड़ न पाए ।
क्यों साजिश इसकी इतनी गहरी ,
जो अब तक समझ न आए ?
कोशिश होता आतंकवाद खत्म करने की,
खूब जोर लगाया जाता है ।
पर कुछ दिनों बाद सख्ती ज्यों कम होती ,
त्यों यह सिर तक पहुँच आता है ।
बीते कुछ वर्षों में कितने ,
माँ , बहनों के सुहाग धुले !
बीते कुछ वर्षों में ही कितने ,
माँ, बहनों के कोख उजड़े !
अब यह मनमानी कतई नहीं चलेगी,
सारी जनता का खून अब खौल रहा ।
जनता ही अचानक अब टूट पड़ेगी ,
हर जनता का धीरज अब डोल रहा ।
देश अब कतई बर्दाश्त नहीं कर सकता ,
जहरीले आतंकवाद के खतरे को ।
आतंकी कहीं भी टूट पड़ते ,
भले लोगों को खत्म करने को ।
आतंकवाद को खत्म करना है तो ,
हर पल सख्ती से निपटना होगा ।
जहाँ फन दिखे आतंकवाद का ,
तत्क्षण उसे कुचलना होगा ।

अमरनाथ त्रिवेदी
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा , जिला मुजफ्फरपुर

गरल सहज जो पी लेते हैं

मधुर सुधा रस पी लेते हैं,
बोलो देखा है कल किसने,
प्रतिपल जीवन जी लेते हैं,
आओ थोड़ा जी लेते हैं।
बैठे गुमसुम गुमसुम क्यों तुम,
क्यों अँखियाँ तेरी हैं भींगी,
सुंदर जीवन संघर्ष यही,
रण जीतेंगे प्रण लेते हैं।
आओ थोड़ा जी लेते हैं..
पथ में कंटक रहें अनेकों
फिर भी चलना ही जीवन है,
मंजिल दूर भले दिखती हो,
दूरी चल हम झट लेते हैं।
आओ थोड़ा जी लेते हैं
अपने गम से क्यों घबराना,
दूजे का गम पी लेते है।
जीना तो बस उसका जीना,
गरल सहज जो पी लेते हैं।
आओ थोड़ा जी लेते हैं.

डॉ स्नेहलता द्विवेदी "आर्या"
उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय शरीफगंज कटिहार

पत्रकार

सुबह सबेरे दरवाजे पर आता है अखबार,
इस अखबार में संवाद देने वाले का नाम
पत्रकार पत्रकार पत्रकार पत्रकार।
अगर कहीं कुछ होता है तो
जल्दी कोई न पहुँचता,
प्रशासन है देर लगाती पहुँचते जल्दी
पत्रकार पत्रकार पत्रकार पत्रकार।
नाम पत्रकार जनतंत्र की आवाज
कभी किसी से डरते हीं नहीं,
क्योंकि कलम है उनका हथियार
पत्रकार पत्रकार पत्रकार पत्रकार।
तन मन धन से काम वो करते
सबकी सुनते सच- सच लिखते,
फिर भी कभी न ध्यान देती उनपर सरकार
पत्रकार पत्रकार पत्रकार पत्रकार।
दिन रात हैं मेहनत करते
सबकी बातों को गौर से सुनते ,
सच्चाई बोलने पर कभी किसी के हो जाते शिकार
पत्रकार पत्रकार पत्रकार पत्रकार।
सदा सत्य की राह पर चलते
झूठ का कभी न साथ ये देते,
चाहे जेल हो या कभी न बेल हो डरते नहीं
पत्रकार पत्रकार पत्रकार पत्रकार।

नीतू रानी
म०वि०सुरीगाँव
प्रखंड -बायसी
जिला -पूर्णियाँ बिहार

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय
हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि
आपके पास कोई सुझाव हो, तो
कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम
और भी बेहतर कार्य कर सकें।

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ?
आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ?
नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े ।

writers.teachersofbihar@gmail.com

padhyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010